पञ्चम अध्याय
नीरजा माधव के उपन्यासों में नारी विमर्श

सामाजिक जीवन में सत्यम् शिवम् सुंदरम् को विश्व स्थापित करने में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है समाज की विभिन्नता में ही साहित्य का सृजन होता है उपन्यास साहित्य मनुष्य जीवन के सभी आयामों का चित्रण करने वाला सबसे समर्थ सशक्त एवं समृद्ध साधन है। "उपन्यास के संबंध में विजय बहादुर सिंह का विचार है कि उपन्यास वस्तुतः मिथकीय संरचनाओं के बारात आई हुई विधा है मीट में तो अलौकिक चमत्कारों का सौंदर्य रहा करता है तमाम परंपरा रुक जाने पहचाने ख्याल महाकाव्य इस में भरे पड़े हैं वह जिस सभ्यता का बखान करते हैं वह हमारी इस सभ्यता से बहुत पहले की है वहां सुर असुर देव दानव और अफसर आए हैं गंधर्व किन्नर आदमी नर और वानर ही नहीं कॉल की रात तक वह हमारे निकट अगर हैं तो इसलिए नहीं कि हमारे जैसे दिखते हैं या जीते हैं बल्कि इसलिए हमें अपने लगते हैं कि उनके मार्फत हम अपने अनजाने अतीत के करीब जाकर खड़े हो जाते हैं ।"[1] (उपन्यास समय और संवेदना विजय बहादुर सिंह

वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2007 पृष्ठ 10

इस विधा मध्य काल के समय मानी जाती है क्योंकि इसका विषय वस्तु अन्य गद्य विधाओं की तुलना में बड़ा होता है अतः उपन्यास विधा हिंदी साहित्य के रचनाकारों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है हिंदी साहित्य में 1960 के बाद कई महिलाएं हिंदी पन्ना साहित्य के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दी है वह समाज के सभी विषयों पर लेखन कर रही हैं देश व विदेशी विषय पर भी अपनी लेखनी चला रही है ऐसे ही अनछुए विषय पर अपनी लेखनी चलाने वाली डॉ नीरजा माधव जो अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों की आवाज को उठाया है इस उपन्यास के अंतर्गत हम नीरजा माधव के उपन्यासों

में नारी विमर्श व चिंतन का अध्ययन करेंगे डॉ नीरजा माधव के उपन्यासों के अध्ययन के क्रम में मैंने इनके 10 उपन्यासों का अध्ययन किया इसमें से मुझे सात (7) उपन्यास में स्त्री पात्रों की चर्चा करनी है जो निम्नलिखित है।

1.5 तेभ्यः स्वधा

उपन्यास : तेभ्य:स्वधा (सभी पितरों को समर्पित/तर्पण)

पात्र : मीना

(तेभ्यः उनके लिए, उन सभी के लिए, उनसे; स्वधा- पितरों को दिया जाने वाला अन्न/भोजन। स्वाहा शब्द का उपयोग हवी, होम या यज्ञों में देवताओं को अर्पण करने के लिए किया जाता है।)

उपन्यास तेभ्यःस्वधा का शाब्दिक अर्थ है 'उन सभी पितरों को अर्पित'। इस उपन्यास में मीना नामक महिला की कहानी है। उस पर हुए अत्याचार, शोषण व संघर्ष की कहानी है। तेभ्यःस्वधा उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित है। जब 1947 ई. में भारत के दो भाग हुए , एक भारत और दूसरा पाकिस्तान। टुकड़े तो जमीन के हुए परन्तु उस पर रहने वाली जनता को प्रभावित होना था। खबर यह लगी कि जमीन का बँटवारा हुआ है, साथ-साथ हिन्दू-मुसलमान का भी बँटवारा हो गया है। दो धर्मों का बँटवारा नहीं बल्कि दोनों आपस में दुश्मन हो गये हैं। हिन्दू एक तरफ, मुसलमान एक तरफ। इस अफरा-तफरी में लोग एक तरफ से दूसरी तरफ जाने लगे। इसी अदला-बदली में साम्प्रदायिकता की आड़ में लूटमार करने वाले उग्रवादियों ने लोगों के जान-माल के साथ-साथ हिन्दू-मुसलमान में वैमनस्य बढ़ा दिया। नतीजा यह हुआ कि दोनों धर्म आपस में दुश्मन हो गये। एक-दूसरे के समुदाय को नष्ट करने के लिए तत्पर रहने लगे। इसी वैमनस्य के बीच कश्मीर को कब्जा करने की नीयत से पाकिस्तान भी उग्रवाद को बढ़ावा देने लगा। इस विस्थापन व साम्प्रदायिकता की आग में नारियों को भी जलना पड़ा।

हालांकि झगड़ा परिवार का हो या समाज, देश, धर्म का हो, जलना तो नारियों को ही पड़ता है।

नीरजा माधव के इस उपन्यास में धर्म सम्प्रदाय का विवाद है। नायिका मीना है जो नरसंहार करने वाले कबाइलियों के हत्थे चढ़ जाती है। विभाजन में मीना तो एक उदाहरण मात्र है कि कैसे-कैसे नारियों को त्रस्त किया जाता रहा है। मीना हिन्दू धर्म की है, उसका धर्म भ्रष्ट करने के लिए उस पर यातनाएँ की जाती हैं। काबाइली साफी खान एक बार गुस्सा होकर मीना की खूब पिटाई करता है और अपने ईमान व धर्म को संरक्षित रखने वाली हिन्दू महिला के मुँह में धर्म भ्रष्ट करने की नीयत से वह माँस का टुकड़ा डालने का यत्न करता है।

"अब्बू ने जलता हुआ मांस का टुकड़ा अम्मी के मुँह में ठूँसते हुए किचकिचाकर कहा- ले खा, गाय का गोश्त, बहुत दिनों से तेरे ईमान को बचाता आ रहा था मैं। सोच रहा था, कभी-न-कभी तू खुद रास्ते पर आ जायेगी; लेकिन काफिर की औलाद काफिर ही रहेगी। मेरे खानदान को भी नापाक करने पर तुल गई तू।[2]"

नीरजा माधव के इस उपन्यास में इसी तरह की साम्प्रदायिक बातों को उठाया गया है। जिसके केन्द्र में नारी प्रताड़ित होती रहती है। मीना के साथ रहने वाली अन्य नारियाँ भी प्रताड़ित होती हैं। परन्तु सबका कारण अलग-अलग होता है।

नीरजा माधव ने नारी की प्रताड़ना व उपेक्षा के कई आयामों को इस उपन्यास के माध्यम से छुआ है। इन्होंने अपनी नायिका मीना व अज़्जू के माध्यम से नारी चिंतन को विषय बनाया है। मीना जब अपने पुत्र अज्जू को यह कहते हुए सुनती है कि नारियाँ पुरुषों की बराबरी नही कर सकती है, वे हर तरह से कमजोर होती हैं। अज्जू के ए कहने पर कि औरतों का दिल कमजोर होता है और वह तुरन्त ही रोने लगती है। इस बात पर मीना समझाती है कि-

"नहीं अज्जू! एक से एक औरते हैं, जो इस तरह के युद्ध या छद्म युद्धों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। पुरुषों के भी कान काट लें अपनी बर्बरता से। दिल कभी कमजोर

नहीं होता । किसी-किसी में करुणा की मात्रा अधिक होती है तो किसी में क्रूरता की । बस्स....।"[3] इन बातों से लेखिका स्पष्ट कर देती है कि नारी कमजोर नहीं है । विज्ञान भी ऐसा मानता है कि लिंगभेद से शरीर कमजोर नहीं होता है । नारियों को सदियों से जिन परिस्थिति में रखा गया है, उस तरह उनका शरीर हो गया है । जैसे कि 'सीमोन द बुवार' भी मानती है कि स्त्री जन्म से नहीं बल्कि परिस्थितियों से बनती है । सीमोन ने अपनी पुस्तक में माना है कि पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के पूरक हैं।

"नारी पृथ्वी है और पुरुष बीजरुप, नारी जल है और पुरुष अग्नि । अग्नि और जल के संयोग से ही सृष्टि का कार्य होत है ।"[4]

विस्थापन का मतलब होता है कि स्थान बदलना, किसी को अपने स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर रखना । यह बहुत दुखद होता है । भाव का विस्थापन हो या मनुष्य का, दोनों दुखद होते हैं । फिर भारत-पाक विभाजन की तो बात ही अजीब है । उदाहरण दृष्टव्य है-

"अरे भैया, पूरा इतिहास उठाकर देख लो, प्राचीन से लेकर आज तक। राजा बदले, सत्ता बदली, एक-दूसरे की पीठ में छुरा घोंपकर राज्य हथियाया गया पर कभी प्रजा बदली गयी हो ? ऐसा पहली बार हो रहा है । प्रजा की अदला-बदली और उसमें भी अपना खूनखराबा शायद इतिहास में पहली बार हो रहा है ।"[5]

देवसदन बाबा के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि उस समय सभी के मन में विभाजन के प्रति बहुत रोष व्याप्त था । क्योंकि प्राचीन काल से लेकर देखें तो भारत-विभाजन एक ऐसी घटना है जो कि जनता को इतना प्रभावित करती है। जनता को बोला जाता है कि एक क्षेत्र से निकलकर दूसरे क्षेत्र में बस जायें । इसी के साथ हिन्दू-मुस्लिम का भी विभाजन हो गया था । उनकी इच्छा क्या थी वह मायने नहीं रखती है । एक तरफ के हिन्दू दूसरी तरफ दूसरे तरफ के मुसलमान इस तरफ आने लगे, उन्हें अपना घर-परिवार, अपनी जमीन, व्यापार आदि सब छोड़कर या औने-पौने दाम में बेचकर विस्थापित होना पड़ा । इन सब परिस्थितियों में पाकिस्तान ने अपनी चाल चलकर मार-काट, लूटपाट आदि

करना प्रारम्भ करा दिया । पुलिस के कपड़े पहन कर लुटेरे आते थे । सबको मार देते। महिलाओं को सीलभंग करके मार देते या अपने साथ ले जाते । पाक कश्मीर को अपने साथ रखना चाहता था । तभी इतना नरसंहार कर रहा था । पाक के कबाइली ही नहीं आतंकवादी भी आज पूरे कश्मीर को समाप्त करने की सोच रहे हैं और साफीखान जैसे कितने लोग हैं जो अपने अन्दर नारी के प्रति दुर्भावना व हवस से भरे हुए हैं । भले ही यह कहानी मीना शुक्ल की हो परन्तु यह हजारों महिलाओं की कहानी कहती है । कैसे-कैसे यातनाएँ सहकर भारत-पाक विभाजन में नारियों ने अपने जीवन को जिया होगा ।

मीना शुक्ल एक ऐसी नारी है जो कमजोर नहीं है । हर तरीके से वह नारी जगत का प्रतिनिधित्व करती है । विस्थापन में सबसे ज्यादा नारियों का शोषण होता है । उनकी जिन्दगी खराब हो जाती है । फिर भी नायिका मीना विस्थापन के संघर्ष के बाद अपनी सभ्यता, संस्कृति व सात्विक आचरण की रक्षा करने को संघर्ष करती रहती है । इतने संघर्ष के बाद भी वह अपनी अस्मिता को मटियामेट नहीं होने देना चाहती है । वह किसी आचरण को नहीं अपनाना चाहती जिसे वह पसन्द न करती हो । वह अपने आचरण, संस्कार को खोना नहीं चाहती । इसकी उम्मीद वह अपने बच्चे में देखती है । वह अपने बच्चे को बताती है -

"तो फिर मेरे पास बस यही एक पूँजी है, जिसे तुझे देना चाह रही हूँ, ताकि तुझमें मैं जीवित रह सकूँ ।"[6]

नारी कभी कमजोर नहीं होती है । उसकी परिस्थिति उसे कमजोर कर देती है । जैसे दलितों का शोषण कई शताब्दियों से होता रहा है तो उनकी मानसिकता उसी तरह की बन गयी है । ठीक उसी तरह नारी जगत का है । उनको ऐसी परिस्थितियों में सदियों से रखा गया है कि उन्हें अपने अस्तित्व को पाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ रहा है । देखा जाये तो वह दिन दूर नहीं जब नारी जागरुक और अपने अस्तित्व के प्रति चेतनायुक्त हो जायेगी ।

नीरजा माधव ने अपने नारी पात्र की चेतना का स्तर नारियों को अपने पितरों को पिण्डदान करने तक दिखाया है। मीना की ऐसी मानसिकता है कि जब तक वह कबाइली हमले में मारे गये लोगों का तर्पण 'गया' में नहीं करायेगी तब तक उसे जीवन अधूरा-सा लगता है।

मीना लगातार अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती रही, और उसने देखा कि जो लोग उसके सामने मारे गये हैं जो उसके अपने थे, उनको वह स्वयं की जिम्मेदारी समझती है। उनके तर्पण के लिए वह सोचती थी। भले ही वह स्वयं को मुक्त समझती हो, साफी खान और अन्य आक्रमणकारियों द्वारा मारे गये अपनों के पाप के लिए भागीदार साफीखान ही है। फिर भी वह उनके तर्पण की बात सोचती थी और अपने बेटे को भी समझाती थी। हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज में पिण्डदान आवश्यक माना जाता है। इससे पितरों को संसार से मुक्ति मिल जाती है। वह कहती है कि तर्पण करके उस पाप का प्रायश्चित कर लूँ जो मेरे सामने कत्लेआम हुआ। भले ही मेरा कोई दोष नहीं, उनका तर्पण हो तो मेरी भी मुक्ति हो। इन सब विचारों को सुनकर एक नारी के चेतना व अस्मिता के नये आयाम पर पं. सिद्धेश्वर जी ने कहा कि-

"अपने देश के इतने लोगों के साथ कत्लेआम हुआ और कोई नाम लेवा भी न रहा। माताजी इस उम्र में उन लोगों का तर्पण और श्राद्ध कर रही है, यह बहुत बड़ी देशभक्ति है।"[7]

सही है नारी संघर्ष करते हुए भी कभी भी दूसरों का अहित नहीं चाहती है। उसे सिर्फ अपने अस्तित्व को लेकर चिंता नही रहती बल्कि सभी का ध्यान रखती है। वह सबकी मुक्ति के साथ-साथ अपनी मुक्ति की भी कामना करती है। विभाजन के इतने विपरीत माहौल में नीरजा माधव ने 'तेभ्यःस्वधा' उपन्यास के माध्यम से एक अनमोल कहानी व विविध सवालों को उठाया है। निश्चय ही एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। विभाजन पर कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

"जिन खौफनाक साम्प्रदायिक स्थितियों से बचने के लिए विभाजन कर लिया गया था, वे ही साम्प्रदायिक गतिविधियाँ विभाजन के दिनों में और विभाजन के बाद और तेज और भयावह हो गयीं। अमानवीय कारनामों का न खत्म होनेवाला सिलसिला शुरु हो गया। विभाजन के ऐन वक्त पर और उसके बाद जो नरसंहार हुआ वह भारतीय इतिहास की ही नहीं, विश्व इतिहास की भी एक करुण त्रासद घटना है।"[8]

विश्व की कोई समस्या हो या आपदा उसमें परेशानी सभी को होती है। ये परेशानी झेलने व प्रताड़ित होने में समाज की आधी आबादी मतलब नारी जगत भी कम नहीं है। काम दोनों वर्ग का व नाम केवल पुरुषों का ही होता है।

डॉ. नीरजा माधव ने अपने उपन्यास 'तेभ्यःस्वधा' में मीना नायिका का ऐसा चरित्र गढ़ा है जो विभाजन के भँवर में संघर्ष करती है। पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र मीना की चर्चा एक लेख में करते हैं-

"सीमा के उस पार से आकर कुछ आतंकवादी एक पूरे गाँव को तहस-नहस कर देते हैं, बचती है एक लड़की; पर उस पर भी किसी खूँखार कबाइली की नज़र पड़ जाती है और वह उसे उठा ले जाता है। उसका अस्तित्व तो लुट जाता है, परन्तु वह भीतर से कभी हार न मानने वाली लड़की है। उसे उस आतंकवादी से पुत्र उत्पन्न होता है। उसके पुत्र को जहाँ एक और पिता से मजहब की शिक्षा मिलती है, वहीं दूसरी ओर माँ से वैदिक धर्म की भी शिक्षा मिलती है।"[9]

अतः नीरजा माधव द्वारा चुना गया यह चरित्र समाज के बहुसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और इसके विचार से समाज को नारी संघर्ष के प्रति नयी दिशा व सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

5.2 अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी

यह नायिका प्रधान उपन्यास है। लेखिका ने इस उपन्यास में आधुनिक कामकाजी स्त्री को नायिका बनाया है जो कि एक दलित वर्ग से भी आती है। अतः यह

उपन्यास स्त्री विमर्श के साथ-साथ दलित महिला के साथ होने वाली विभिन्न घटनाओं व बातों को बड़े कौशल के साथ निरुपित करता है, जो निश्चय ही एक महत्त्वपूर्ण संयोग है। उन्होंने समाज के बीच से ही पात्र को लिया है। नारी के प्रति सामाजिक रुढ़िवादिता को व्याख्यायित किया है। इस उपन्यास में पितृसत्तात्मक, ब्राह्मणवादी, सामंतवादी सोच को लेखिका ने भवप्रीता के माध्यम से उजागर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। भवप्रीता एक पुलिस कांस्टेबल भी है। पुलिस लोगों की रक्षा के लिए होती है। वह स्वयं डर व उत्पीड़न से गुजरती रहती है जिसके केन्द्र में परिवार, मित्र, समाज, पुलिस विभाग, सरकार सभी हैं। लेखिका ने भवप्रीता नायिका के माध्यम से, जो कि एक आधुनिक कामकाजी स्त्री का प्रतीक है, को एक मानक की तरह रखकर इस सामंतवादी दुनिया की पड़ताल की है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही लेखिका ने यह दर्शाया है कि कोई भी सरकारी कार्यालय हो, वह सब एक जैसा ही होता है, चाहे वह पुलिस स्टेशन ही क्यों न हो।

पुलिस स्टेशन के अन्दर की कार्य प्रणाली की एक वानगी यह है कि डी.आई.जी. आये हैं, सबका परिचय लेते हुए भवप्रीता भी अपना परिचय देती है। उसे संकोच होता है अपने नाम के साथ लगे 'आर्या' शब्द से। इस शब्द से सभी को पता चल जाता है कि वह किसी पिछड़े दलित समाज से है। जैसा कि डी.आई.जी. के सामने भी ऐसा ही हुआ। सबने कानाफूसी की वह रामबली राम की बेवा है और 'राम' शब्द पर विशेष बल देकर लोग बात कर रहे थे। परन्तु डी.आई.जी. साहब के स्नेहिल व्यवहार से भवप्रीता को बहुत खुशी हुई। प्रमोशन के लिए फाईल भेजने को बोल रहे थे। और अन्त में बोला कि कुछ दिक्कत हो तो मुझसे मिल सकती हो। इसी बात पर सभी पुलिसवाले खूब हँस रहे थे। बाद में सतीश सिंह ने चुटकी लेते हुए कहा था- "बाहर निकलते ही इंस्पेक्टर सतीश सिंह ने धीरे से चुटकी ली-जल्दी प्रमोशन चाहिए तो कल ही जाकर मिल लो, मिस आर्या। शुभ काम में देर कैसी?"

मैं चुपचाप उन्हें घूरकर आगे बढ़ गयी थी। इस विभाग में रहते हुए बातों के निहितार्थ कुछ अधिक ही खुलने लगे हैं। साहित्य की विद्यार्थी हूँ, लक्षणा, व्यंजना पढ़ती भी हूँ और समझती भी हूँ।"[9]

भवप्रीता एक पढ़ी-लिखी स्त्री है। वह स्नातक है। लोगों की गूढ़ बात भी वह खूब समझती है। मृतक आश्रित पर नौकरी करने के बाद भी वह पढ़ाई का शौक रखती है। वह अलग-अलग पुस्तक पढ़ती भी है। वह अपने विभाग में होने वाली मीटिंग व सेमिनार आदि बड़ी इच्छा से सुनती है और अपने ज्ञान व तर्क से उसे विश्लेषित भी करती है।

अपने विभाग के इंस्पेक्टर सतीश सिंह उसे बार-बार स्त्री होने के कारण परेशान करते हैं। जैसे एक दिन भवप्रीता ऑटो के इंतजार में खड़ी थी, उसे ज्ञानवापी पर ड्यूटी जाना था। इंस्पेक्टर सतीश उसे अपनी पुलिस जीप में बैठाकर ज्ञानवापी छोड़ने की बात करते हैं। वह मना करती है फिर भी उसे बैठा लेता है। और उल्टी-सीधी बातें करता है तब भवप्रीता लहुरावीर में उतर जाती है कि काम है मुझे यहाँ।

इन सब बातों से वह समझती है कि स्त्री होने के कारण ही उसे ऐसा झेलना पड़ता है। यह भी महसूस करती है कि मैं दूसरों की रक्षा कैसे करुँगी जब मुझे ही इतनी समस्या हो रही है। इस संबंध में वह 11 मार्च को अपनी डायरी में लिखती है कि बी.ए. का फार्म भर दिया है। नौकरी और परिवार के बीच से समय नहीं मिल पाता पढ़ाई को। अगर बी.ए. हो जाता है तो मुझे डिपार्टमेन्ट से प्रमोशन मिल जायेगा व आर्थिक सहायता भी मिल जायेगी। तब सबकी नज़र में मेरी इज्जत भी बढ़ जायेगी। अभी तो सभी महिला पुलिस होने पर भी बुरी नजर से देखते हैं।

"अभी तो कांस्टेबल समझ बहुत-सी बातें झेलनी पड़ जाती हैं उच्चाधिकारियों की। तब शायद मानसिकता में कुछ परिवर्तन आये। दूसरों की सुरक्षा करने वाली बेचारी महिला पुलिस, अपनी व्यथा किससे कहने जाए? दूसरी औरतों को यौन शोषण से बचाने वाली महिला पुलिसकर्मी....?"[11]

ऐसा माना जाता है कि सृष्टि की सबसे सुन्दर सृजन नारी ही है। हमारी भारतीय संस्कृति में नारी का सदा से उच्च स्थान रहा है। हर युग में नारी चर्चा में रही है। कारण अलग-अलग रहे हैं। प्राचीन काल में व वेद पुराणों में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह ममता, विद्वत्ता, सहिष्णुता आदि गुणों से युक्त थी। मध्ययुग की यदि उपेक्षा

करें तो नारी का स्थान हमेशा ही सर्वोपरी रहा है। परन्तु समय-समय पर उसका स्थान बदलता रहता है। जहाँ भी वह उपस्थित रहती है। पितृसत्तात्मक सोच के कारण उसे उचित स्थान नहीं दिया जाता। हर युग में उसे दूसरे दर्जे की मान्यता मिली। मृदुला गर्ग का यह वक्तव्य बताता है कि किसी भी क्षेत्र में नारी हो उसे दूसरे के अनुसार रहना पड़ता ही है।

"जैसे ही चित्रण पुरुष से हटकर नारी पर आता है, साहित्यिक विरासत और स्त्री की मादा छवि उन पर हावी हो जाती है। वह उसका वर्ग, परिवेश, काम, पेशा सब भूल जाते हैं और याद रहता है केवल यौन उत्पीड़न और यौन शोषण। उसके अनुसार स्त्री है तो मादा ही, चाहे जिस वर्ग से भी हो।"[12] पुरुष की ऐसी मानसिकता पितृसत्तात्मक सोच की रुढियों की वजह से बन गयी है। एक लड़की का जब जन्म होता है तो वह अपने पिता की छत्रछाया में रहती है। कुछ बड़ी होती है तो उसे अपने भाइयों की छत्रछाया में रहना पड़ता है। बाद में उसके बच्चे बड़े हो जाते हैं तो वह बच्चों की देखरेख में रहती है। जबकि नारी पुरुष से शारीरिक व मानसिक दोनों में कमजोर नहीं है। सिर्फ रुढ़िवादी सोच जो कई शताब्दियों से चली आ रही है, उसी का नतीजा है कि पुरुषवर्ग अपने को नारी से श्रेष्ठ व महिलाएँ स्वयं को कमजोर आंकती हैं। इस सोच में परिवर्तन सिर्फ शिक्षा में सबल होने पर ही हो सकता है। खास करके महिलाओं को शिक्षित, जागरुक व आर्थिक सबल होना पड़ेगा। जब तक लोगों की मानसिकता नहीं बदलती है तब तक समाज में व्याप्त विसंगति को दूर करना सम्भव नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास में भी इसी मानसिकता की बात कही गयी है कि नारी वर्ग को लोगों ने एक खास प्रतिबंधित क्षेत्र में सीमित बना रखा है। जबकि वे भी उन्हीं की तरह हाड-मांस के इंसान हैं। स्वतंत्र भारत में अब ऐसा कोई भी वर्ग नहीं है जो किसी से कम हो। नारियां कमजोर सिर्फ रुढ़िवादी मानसिकता की वजह से है। ऐसा प्रसंग उपन्यास में भी आया है जबकि दोनों वर्ग अधिकारी हैं, फिर भी महिला वर्ग को पितृसत्ता की वजह से पीछे हटना पड़ता है। लेखिका सवाल उठाती है कि यह मानसिकता कब तक चलेगी ? कब एक

महिला अपने सहकर्मी के साथ बराबर का व्यवहार कर पायेगी? ऐसी समझ कब आयेगी कि एक स्त्री को स्त्री की वजह से झुकना न पड़े। लेखिका पिंजरे की चिड़िया ललमुनिया को प्रतीक बनाकर कहती हैं कि-

"मानसिकता में परिवर्तन जब तक नहीं होगा तब तक स्तरी का शोषण नहीं थमेगा। ... चलो मनप्रीत! ललमुनिया और तुम! पिंजरे से कब निकल पाओगे?"[13]

वैदिक साहित्य के अध्ययन में देखें तो भारतीय स्त्री के आदर्श रुप पाये जाते हैं। परन्तु समय हमेशा एक सा नहीं रहता है। समय बदलता है तो अपने साथ बहुत कुछ बदल देता है। जैसा नारी के सम्बन्ध में हिन्दी व संस्कृत साहित्य में जो भी वर्णन मिलते हैं ये आपस में बहुत विरोधी भी हैं। ऐसे भी प्रसंगों की भरमार है, जहाँ कि पूर्व व वर्तमान मानसिकता में सामन्जस्य बनाना मुश्किल हो जाता है। नारी को नरक का द्वार कहा गया है तो कहीं-कहीं स्वर्ग जाने में सहायक माना गया है। रामायण काल में आते-आते तो नारी के गुण-अवगुण में बदल गये थे। रामायण काल में सीता जैसा चरित्र देखने को मिलता है तो शूर्पनखा भी है।

महाभारत काल में द्रौपदी भी है जो सीता से बिलकुल अलग एक प्रतिकार करने वाली नारी है। और बाद में तो बाहरी आक्रान्ताओं के आ जाने से तो नारियों की स्थिति ऐसी हो गयी कि उससे उबरने में कई शताब्दियाँ लग जायेंगी। इसी तरह की समस्या नारी के व्यक्तिगत जीवन में भी होती है। जैसा कि उपन्यास में बताया गया है नायिका भवप्रीता अपनी डायरी में लिखती है कि महिलाओं का जीवन पुरुष से जुड़े रहने पर ही सम्भव है। उदाहरणस्वरुप वह अपने सहकर्मी विजय शर्मा की कहानी बताती है जिससे नारियों के वजूद को दिखाया गया है कि पुरुष जो चाहे अपने लिए निर्णय ले लेता है। वह किसी भी पुरुषवादी सोच वाले को दिखाई नहीं देता। विजय पहली पत्नी के रहते दूसरी शादी मुसलमान लड़की से कर लेता है। जब नौकरी में समस्या होती है तो विजय धर्म बदल लेता है। इस निर्णय से विजय तो खुश है परन्तु साथ रहने वाली स्त्रियों को बहुत

दिक्कत है । हिन्दू पत्नी पति का नाम क्या बताये व बच्चों के नाम क्या रखे। दूसरी पत्नी को भी संस्कृति व संस्कारों में जो भिन्नता है उसे कैसे सम्भाले ।

नायिका भवप्रीता 3 अप्रैल को अपनी डायरी में अपनी शादी की बातें याद करते हुए लिखती है कि कैसे उसकी शादी एक शादीशुदा से होती है । और इस शादी में सिर्फ पुरुष को ही सारी खुशियाँ मिल रही हैं । वह अपनी शादी के पहले दिन व रात का वर्णन बताती हुई कहती है कि पहली पत्नी रो रही है कि मेरे जिन्दा रहते मेरे पति ने दूसरी शादी कर ली, और मैं दूसरी पत्नी होकर भी खुश हूं क्या ?, और जिस तरह से रामवली ने बात की उससे नायिका बहुत दुखी है कि समझौता सिर्फ स्त्री ही करती है । सारे कष्ट भी उसी को मिलते हैं । उस रात उसने जो महसूस किया वह सिर्फ भवप्रीता का दुख नहीं है बल्कि समाज में ऐसी घटनाएँ आम हो गयी हैं ।

"पुरुष समझौता करता भी है तो स्त्री की ही कीमत पर । स्त्री अवर्ण हो या सवर्ण, दाँव पर उसे ही लगना है । उसी रात से मैंने पहली बार अपने को अवर्ण माना, अधूरा व अछूत माना, दलित और शोषित माना । स्त्रियों की कोई जाति नहीं होती का फलसफा उसी रात समझा मैंने । हर स्त्री ऐसी ही अवर्ण और दलित है यदि अपने अस्तित्व के लिए वह तनकर नहीं खड़ी हो जाती। अपने अधिकारों के लिए मुठ्ठियाँ भींचने वाली स्त्री और मन के विरुद्ध दिए जाते निर्णय को नकारने वाली स्त्री ही अपने जीवन के संग्राम में योद्धा बन सकती है । शेष तो समर्पिताएँ और दासियाँ बन जाती हैं । इस निर्माण प्रक्रिया में माता-पिता के साथ ही परिवार के अन्य सदस्य भी उतने ही जिम्मेदार होते हैं ।"[14]

भवप्रीता आर्या पुरुषवादी सोच को दिखाने के लिए बताती है कि किस तरह समाज में स्त्री को सिर्फ एक वस्तु की तरह उपयोग किया जाता है । अपने फायदे के लिए स्त्री को धूल के बराबर भी नहीं समझता है । नायिका अपनी शादी के बाद की डायरी लिख रही है कि कैसे एक नौकरीपेशा पुरुष की दूसरी पत्नी मुझे बनना पड़ा । पिता व भाई ने अपना काम खत्म कर दिया मेरी शादी करके । मेरे पति रामवली ने बताया कि पहली पत्नी बीमारी की वजह से मरने वाली है, सो तुमसे शादी की । तुम बच्चों का ध्यान रखना ।

रामवली की पहली पत्नी खूब रो रही है। लेखिका ने नायिका के माध्यम से बताया है कि पुरुष समझौता करता है तो अपने लाभ के लिए न कि किसी के साथ जीवन जीने के लिए। उसे जिससे लाभ होगा वही करेगा। दोनों स्त्रियों का क्या अस्तित्व है, इसका उसे कोई आभास नहीं।

"बोउवा कहती है कि -औरत पैदा नहीं होती, बनाई जाती है। यह बात सच ही है तभी तो सारे साहित्यिक और सांस्कृतिक गरिमामय शब्दजाल से आदमी ने औरत की जिस चीज को मारा, कुचला या बनाया है, वह है उसकी स्वतंत्रता। इतना ही नहीं नारी को दो हिस्सों में बाँट दिया। नारी को सम्पूर्ण रुप से स्वीकार कर उसके मस्तिष्क के महत्त्व को भी स्वीकार करना होगा।"[15]

कई शताब्दियों से चली आ रही पितृसत्तात्मक मानसिकता ने स्त्री व पुरुष को इतना प्रभावित कर दिया है कि उन्हें कितना भी एहसास दिलाया जाये कि दोनों में कोई अन्तर नहीं है। स्त्री न तो शारीरिक रुप से कमजोर होती है, न मानसिक रुप से। जो शारीरिक व मानसिक विभिन्नता दिखती है वह सिर्फ कई शताब्दियों की रुढ़िवादी सोच के कारण है। जब तक हम उस सोच से पार नहीं पा लेते हम समाज में दोनों वर्गों को समान नहीं बना पायेंगे। कोई भी समाज, प्रदेश या देश कितना विकसित है इसका एक मानक वहाँ की स्त्रियों के जीवन स्तर पर होता है। वर्तमान समय में रुढिवादी पितृसत्ता जो कि पुरुषवादी सोच वाली है वह समाज के दूसरे वर्ग, स्त्री वर्ग को दूसरे दर्जे का समझते हैं। यदि स्त्रियाँ जागरुक होकर अपने अधिकार को माँगती हैं तो पुरुषवर्ग को यह बात नहीं पसन्द आती है। वे स्त्री को शारीरिक व मानसिक रुप से कमजोर समझते हैं। भारतीय समाज का कोई भी धर्म हो या जाति हो, कोई भी वर्ग हो सभी में स्त्री का शोषण है। परन्तु अपने अपने स्तर से है। हर वर्ग की अपनी परिस्थितियाँ होती हैं। हर आयाम में स्त्री शोषित होती है। स्त्री को स्वतंत्रता देना पुरुषवादी स्त्रियों को भी रास नहीं आता है। पुरुषों की तो बात ही अलग है। सदियों से जो सोच सभी के मस्तिष्क में रच-बस गयी है उससे बाहर निकलना आसान नहीं है।

यदि स्त्रियाँ विद्रोह करें इसके लिए उन्हें शिक्षित व जागरुक होना पड़ेगा। प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाना ही एक मार्ग है समाज में समरसता लाने का। जैसे हिन्दी साहित्य में भी बहुत कुछ लिखा जाने लगा है वह स्त्री व पुरुषों दोनों लेखकों के सौजन्य से है। कुछ दशक पहले से स्त्रियों के हक्, अधिकार को लेकर साहित्य में भी लेखन कार्य होने लगे। इसमें स्त्री-पुरुष दोनों ने समभाव से लिखा है। सिर्फ महिला ही नहीं, पुरुष भी उनके अस्तित्व को स्थापित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। लेखिका ने भवप्रीता को नायिका बनाकर एक ऐसी कहानी उपन्यास के रुप में गढ़ी है जो समाज की सामान्य लड़की का प्रतिनिधित्व करती है। इस सम्बन्ध में डॉ. रामसुधार सिंह का वक्तव्य है कि-

"इस उपन्यास की नायिका भवप्रीता की हैसियत, नारी के प्रति पुरुषवादी सोच, नई पीढ़ी का अपने बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा का भाव और नव समाज की संरचना के तंतुओं को प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है। लेखिका इतिहास को खंगालती हुई वर्तमान समाज की रुढ़ियों और कुण्ठाओं पर सिर्फ जुमले नहीं उछालती है बल्कि समाज के गतिशील यथार्थ की सार्थक, रचनात्मक प्रस्तुति करती है।"[16]

नीरजा जी ने समाज से एक साधारण-सी लड़की को बिम्ब बनाकर स्त्री के अस्तित्व की यथार्थ प्रस्तुति की है। निश्चय ही साहित्य जगत में मील का पत्थर है। पितृसत्तात्मक समाज में निःसंदेह स्त्री का वजूद कमजोर है और यदि वह स्त्री दलित है तो फिर इस समाज में उसे अपने अस्तित्व के लिए लम्बा संघर्ष करना ही पड़ेगा।

डॉ. नीरजा माधव ने दलित स्त्री की व्यथा बहुत ही संवेदनशील तरीके से उठाई है। ऐसा यथार्थ वर्णन दलित स्त्री को लेकर करना किसी सामान्य लेखक के लिए आसान नहीं है। इस सम्बन्ध में डॉ. साताप्पा का विचार देखें-

"नारी अबला होने के कारण वह मनुवादी पुरुषी वर्चस्व मानसिकता धारण करने वाला समाज से शोषित रही है। नारी का यह शोषण श्रम, बुद्धि और शरीर के स्तर पर दिखाई देता है। दलित कहानीकार नारी शोषण के प्रति काफी चिंतित दिखाई देते हैं।

नारी शोषण की दाहकता प्रभावी अंकन कर समाज के सामने उसकी तीव्रता का चित्रण करना है।"[17]

मशीनीकरण के इस दौर में भारत की मूल संस्कृति व संस्कारों को संरक्षित करना बहुत कठिन होता जा रहा है। लोक संस्कृति सहेजी न गयी तो विलुप्त होने में देर नहीं है। लेखिका नीरजा माधव अपनी लेखनी में ऐसे ही वर्ग, समुदाय की विलुप्त आवाज को उठाती हैं। ताकि उन्हें संरक्षित करने में मदद हो सके। उनका साहित्यिक सृजन रोचकता के साथ पढ़ने के अलावा अपने आप में विषय की गम्भीरता व विभिन्नता भी रखता है। संवेदनशील विषय पर लेखन के नाम पर वे केवल शब्दों का जाल नहीं बनाती बल्कि पूरी जिम्मेदारी के साथ विषय के साथ न्याय भी करती है। ताकि पाठक को विषय़ पर सम्पूर्ण हकीकत के साथ सामूहिक जिम्मेदारी का भी एहसास हो।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से संबंधित होने के कारण लेखिका कथा को विविध ढंग से प्रस्तुत करने और उसे रोचक बनाने की कला मे माहिर हैं। यह उपन्यास समाज की दो ज्वलन्त समस्याओं- स्त्री व दलित वर्ग- पर केन्द्रित है। लेखिका ने इस उपन्यास को डायरी शैली में लिखा है। नायिका भवप्रीता आर्या एक दलित स्त्री है जो कि डायरी लिखती है जिससे उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में है। इस डायरी में 27 फरवरी से लेकर 2 अगस्त तक का विवरण मिलता है। अतः दलित होकर एक स्त्री की आत्मकथा बहुत ही संवेदनशील है। इस कथा के साथ लेखिका ने दोनों विषयों का समायोजन कर उपन्यास साहित्य में दलित स्त्री की आवाज को बुलंद किया है जो कि साहित्य में मील का पत्थर है।

5.3 यमदीप

यमदीप उपन्यास में यम अर्थात् नरक व दीप अर्थात् दीया। नरक के लिए दीया या नरक का दीया। जैसे लोक संस्कृति है कि किसी विशेष दिन एक दीया जलाते हैं उसे आस-पास गंदगी वाली जगह रख आते हैं जिसे नीरजा माधव ने 'घूरे का दीया' बनाया है। लेखिका का 'यमदीप' नाम से सम्बन्ध नारी से है। लड़की पैदा होती है, बड़ी होती है

तो माता-पिता उसकी शादी करके अपनी जिम्मेदारी से निवृत्त हो जाते हैं। अब लड़की अपना जीवन-यापन अपने नये परिवार में करती है और लड़की की जिम्मेदारी से माता-पिता शादी के बाद मुक्त हो जाते हैं। वैसे ही घूरे का दीप भी है। लोग जला कर रख आते हैं और अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं। जबकि स्त्री व पुरुष समाज में बराबर हैं परन्तु भारतीय समाज में स्त्रियों को दूसरे दर्जे का माना जाता है क्योंकि सदियों से समाज पुरुषप्रधान रहा है। जिस घर में एक लड़की का जन्म होता है, उसके माता-पिता को कई प्रकार की चिंता हो जाती है। यह बात स्त्री समाज के लिए अच्छी नहीं है। यदि पुत्र जन्म होता है तो खुशियाँ मनाई जाती हैं। जबकि लड़की के लिए दुःख व्यक्त होता है। भारतीय समाज में लड़की पैदा होती है तो दुख होता है इसका सबसे अच्छा सबूत यह है कि लड़का पैदा होने पर गाये जाने वाले गीत तो बहुत हैं, परन्तु लड़की पैदा होने पर गाये जाने वाले गीत बहुत कम हैं। इस उपन्यास में दर्शाया है कि जब सोना पैदा होती है तो गाने में लड़कों वाला गीत गाते हैं, न कि लड़की होने पर गाने वाला गीत। कई शताब्दियों से समाज पितृसत्तात्मक रहा है। इसी का परिणाम है ऐसा।

नीरजा माधव ने 'मानवी' नाम की आधुनिक नारी का चरित्र दिखाया है। जो कि वर्तमान समाज में व्याप्त मानसिकता का दर्शन कराती है। मानवी अखबार के अपने नियमित साप्ताहिक अंक में पितृसत्तात्मक समाज की विवेचना में लिखती है कि-

"पुरुषप्रधान इस भारतीय समाज में नारियों को भी पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। लेकिन वे अपने अधिकारों का उपयोग कितनी स्वतंत्रतापूर्वक कर सकती हैं,यह एक जलता हुआ प्रश्न है। अधिकार के इस मुद्दे को बिना कोई राजनैतिक या धार्मिक रंग दिये प्रस्तुत है कुछ स्वरूप नारी- शोषण के और उनके अपने अधिकारों की अनभिज्ञता अथवा वंचना के।"[18]

मानवी पितृसत्ता की ये बातें अपने अखबार के लिए लिखती है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह पंक्ति उपन्यास प्रस्तावना है, यह फीचर की गंभीरता को बताता है

। मानवी के माध्यम से नीरजा माधव जी ने नारी चेतना से ओत-प्रोत समाज को दिशा दिखाने वाला चरित्र बुना है। जो आधुनिक नारी का प्रतीक है। वह अपने व समाज की नारियों के अस्तित्व व अधिकारों के प्रति आवाज बुलन्द करती है।

इस उपन्यास की कथा की भूमि बनारस की 'वरुणा नदी' के किनारे का इलाका है। वरुणा नदी जैसे स्वयं अपने अस्तित्व के लिए संघर्षमय है उसी तरह नारी भी अपने अस्तित्व के लिए प्रयासरत है। समाज में व्याप्त नारी के प्रति पितृसत्ता की कुंठित सोच के विविध परिणाम को नीरजा जी ने पत्रकार मानवी के जरिए परत-दर-परत खोला है। ऐसा सिर्फ एक प्रतिभाशाली लेखिका ही कर सकती है। जबकि नीरजा जी का यह प्रथम उपन्यास है।

समाज और समाजिकता का भय ऐसा है कि उसे झेल पाने की ताकत सभी मे नहीं होती है। समाज में जो परम्परा व्याप्त हो उससे लड़ने या बदलने की कवायत करना मुश्किल हो जाता है। इसके लिए नारी को सर्वप्रथम शिक्षा देनी पड़ेगी। शिक्षा से ही जागरुकता पैदा होगी। स्त्री जब अपने हक अधिकार के लिए चेतनाशील होगी तभी उसे कुछ प्राप्त हो सकता है। पुरुषवादी सोच के इस समाज में नारी के लिए अपना अस्तित्व बनाना आसान नहीं है। नीरजा माधव की चिंता भी यही है। वे मानवी द्वारा यह बात कहलवाती हैं-

"आखिर कैसे होगी नारी मात्र की सोच ऊँची ? अशिक्षा के अंधेरे में रहते हुए यह संभव है क्या ? सह-अस्तित्व को स्वीकार किए बिना उसे उसका अधिकार मिल पाना आसान है क्या ? आजाद देश की इन प्रतिबंधित नारियों को किस तरह मिल सकेगा उन्मुक्त आकाश, जहाँ इनकी महत्त्वाकांक्षा का पंछी उड़ान भर सकेगा ? कौन देगा आकाश?"[19]

लेखिका डॉ. नीरजा माधव जी द्वारा रचित चरित्र पत्रकार मानवी द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों का साक्षात्कार लेती है, तो पता चलता है कि ग्रामीण महिला, मुस्लिम महिला, महिला पुलिस आदि किन परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे हैं। समाज के ये विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। इस पर नीरजा माधव चिंता

व्यक्त करती हैं कि इन सबका उद्धार कैसे होगा? महिलाओं के प्रति ऐसी सोच हो गयी है कि लड़के व लड़की में बहुत अन्तर समझते हैं। कई शताब्दियों की ऐसी सोच हो गयी है कि लड़कियाँ पुरुषों से मुकाबला नहीं कर सकती हैं। प्रकृति ने उन्हें कमजोर ही बनाया है। जबकि ऐसा नहीं है। जो अन्तर दिख रहा है वह सिर्फ कई सदियों के मानसिक व शारीरिक विभाजन की वजह से है। वह भी समाज द्वारा थोपा गया विभाजन।

उपन्यास में पितृसत्ता की मानसिकता का सच्चा उदाहरण तब सामने आता है जब उद्धारगृह में रहने वाली लड़की पूनम के पिता पत्र पाकर मानवी के कार्यालय मे आते हैं। अपनी लड़की को वापस ले जाने से मना करते है। लोक-लज्जा से वह बहुत परेशान है। अपनी बेटी की छोटी सी गलती पर उसे अपनाना नहीं चाहते है। वह कहते है कि लड़कों से गलती होती है तो उनसे समाज में हमारी इज्जत नहीं जाती, जबकि उसी समाज में लड़की से गलती हो जाये ते माता-पिता की इज्जत चली जाती है। लड़की को अपनाने से मना करते हैं। ऐसी ही सोच वाले पूनम के पिता 'राजवंश' हैं जो लोक-लज्जावश होकर अपनी बेटी को अपनाने से मना कर देते हैं। वे कहते हैं कि-

"देखिए बहनजी, लड़के और लड़की में यही तो फर्क है। लड़की लाज के साथ सुरक्षित मानी जाती है। लड़कों का क्या? वे तो बहता पानी है। लाख ढिंढोरा पीट लो, बहनजी, लेकिन लड़का लड़की का भेद हमारे समाज से खत्म होने वाला नहीं। एक भी धब्बा उनके दामन पर लगा नहीं कि पूरी जिंदगी तबाह उसकी।"[20]

राजवंश जैसे लोग समाज में लोकलज्जा के भय से लड़की को ले नहीं जाते हैं जिस कारण हर शहर, नगर में नारी सुधार, नारी उद्धार गृह भरे पड़े हैं। इन सुधार गृहों में उन्हें बहुत प्रताड़ित किया जाता है। इसी प्रताड़ित की आवाज और सुधारगृह की पड़ताल के लिए नीरजाजी ने यमदीप उपन्यास को चुना है, जिस उपन्यास की नायिका मानवी है।

भारतीय नारी वर्तमान समय में किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कमतर नहीं है। वह आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ बहुत स्वाभिमानी है। वह समय के साथ स्वयं में बदलाव कर सकती है। वह अच्छी परम्परा को मानती है व रुढिवादी परम्परा को नकारती चलती

है। ठीक ऐसी ही नारी की परिकल्पना को साकार रुप दिया है नीरजा माधव जी ने अपने उपन्यास में। जिसमें मानवी आधुनिक काल की जागरुक नारी है जो अपने अस्तित्व के प्रति चेतनाशील है। मानवी को अपने कार्यालय के काम –काज की वजह से देर रात तक बाहर रहना पड़ता है। गर्मी या कभी-कभी ठंड से उसे गुजरना पड़ता है। अनाथ व असहाय लड़कियाँ जो कि नारी सुधार गृह में हैं, उनकी पीड़ा को वह अपने अखबार मे 'फिचर' में छापना चाहती है, इसलिए वह उद्धारगृह की संचालिका रीतादेवी से मिलती है। रीतादेवी लड़कियों से मिलवाने व उनका साक्षात्कार करने से मना कर देती है। इसी बात को लेकर विधायक मन्नाबाबू का बेटा संतोष सिंह मानवी को धमकाने के लिए आता है। तब मानवी एक शेरनी की तरह दहाड़ कर कहती है कि-

"क्या बकवास कर रहे हैं आप? मेरी विनम्रता का अर्थ अगर कायरता से ले रहे हो तो भूल जाइए, मिस्टर ! जुबान को नियंत्रित रखकर ही बोलिए।" अत्यधिक क्रोध के कारण आवेश में मानवी जितना कड़ा बोलना चाह रही थी शायद उतना नहीं बोल पाई थी।"[21]

नीरजा माधव ने यमदीप उपन्यास में मानवी के चरित्र को बुना है जो कि समाज की प्रगतिशील नारी का प्रतिनिधित्व करती है। लेखिका स्वयं नारी हैं इसलिए वे नारी संघर्ष को यथार्थ के धरातल पर समायोजित करने में सक्षम हैं।

इस उपन्यास में स्त्री-विमर्श की बात को जोरदार ढंग से उठाया गया है। उपन्यास में विमर्श आरोपित नहीं है बल्कि यह उपन्यास का हिस्सा बन गया है। आधुनिक समय में व्यक्ति एकाकी होता जा रहा है। सभी के जीवन में अलगाव अहम हिस्सा बन गया है। उपन्यास में मानवी और उसकी माँ भी अलगाव का हिस्सा बने हैं। नारी अपने जीवन में कितना संघर्ष करती है और वृद्धावस्था में उसे यदि एकान्तिक पीड़ा मिले, तो इससे नारी के जीवन संघर्ष को मापा नहीं जा सकता है। इन्हीं नारी जीवन संघर्ष को व्याख्यायित

करती उपन्यास की पंक्ति जिससे मानवी अपनी माँ के प्रतीकात्मक रुप से पूरे समाज को व्याख्यायित करती है।

"मानवी का मन भर आया, कितनी बँटी-बँटी-सी है अम्मा ! उधर बाबूजी, भइया, इधर वह और जेल में मधुकर। सभी को समेटने में कितनी बिखर गयी है अम्मा ? कौन जान सका उसकी पीड़ा ? किसने गिने उसके हृदय के फफोले ? वही है नारी की वह परम पदवी जिसे पाने के बाद वह धरती हो जाती है ? .. शून्यगर्भा धरती, जब तक धरती नहीं, तब तक एक वस्तु है नारी, जिसे हर व्यक्ति अपने- अपने तराजू में अपने ढंग से तौलता है। पुत्री है तो उसे पिता के पलड़े में ठीक होना चाहिए, बहन को भाई के, पत्नी को पति के और स्त्री के रुप में पुरुष वर्ग का अपना मानक है। यानी वस्तु से धरती में परिवर्तन होने का नाम है नारी।"[22]

नारी के संघर्ष को प्रतिबिम्बित करती ये पंक्ति सत्य ही है कि नारी का त्याग और धर्म की समानता सिर्फ धरती से ही की जा सकती है क्योंकि धरती ही वह क्षमता रखती है। पुरुषों के लिए इतना त्याग करती है स्त्री फिर भी पुरुष उसे सिर्फ वस्तु समझता है।

पितृसत्ता की यह सोच से निश्चय ही एक दिन नारी की प्रतिरोध भावना जागेगी। तब समाज की सोच में परिवर्तन संभव है। यह उपन्यास स्त्री-चेतना के बड़े कैनवस में लिखा गया है। स्त्री प्रताड़ना के सभी तरीकों को परिभाषित करता है। नीरजा जी ने यमदीप में स्त्री के हर रुप को दिखाने का प्रयास किया है चाहे वे उद्धारगृह की लड़कियाँ हों, आधुनिक व शिक्षित पत्रकार मानवी हो, उद्धारगृह संचालक रीतादेवी हो या मानवी की माँ हो। रीतादेवी के चरित्र चित्रांकन से पता चलता है कि पितृसत्तात्मक मानसिकता सिर्फ पुरुषों में ही नहीं समाहित है बल्कि स्त्रियाँ भी इसका शिकार हैं। क्योंकि ऐसी मानसिकता वाले ही स्त्री को वस्तु की तरह प्रयोग करते हैं। स्त्री की स्थिति, मनोविज्ञान, सामाजिक, आर्थिक दुश्चक्रों में फँसी नारी की कथा का विस्तृत विवेचन यमदीप है। सम्भ्रान्त समाज की मानसिकता को दिखाने वाला यह एक सार्थक उपन्यास है जिसमें

लेखिका समाज की खोखली सोच को परत-दर-परत उजागर करती हैं। यमदीप के संदर्भ में डॉ. वंदना झा लिखती हैं कि-

"स्त्री की स्थिति, मनोदशा, सामाजिक, आर्थिक दुश्चक्र में फँसी नारी की कथा का यह विस्तृत फलक है जिसे लेखिका बयां करना नहीं भूलती। एक तरफ पढ़ी-लिखी मानवी है जो तथाकथित पढ़े-लिखे समाज द्वारा अपने सहकर्मियों की बुरी नजर से बच नहीं पाती, तो दूसरी तरफ संवासिनी गृह में रह रही बालिकाएँ हैं जो अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। पूनम नाम की बालिका जो चीनी की थैली फट जाने मात्र से माँ-बाप की मार के भय से भाग जाने के कारण परिस्थितिवश संवासिनी गृह पहुँच जाती है और पत्रकार मानवी की कोशिश से जब उसके पिता राजवंश को बुलाया जाता है, तो वे समाज के भय से उसे ले जाने से इंकार कर देते हैं।"[23]

नीरजाजी एक विचारशील लेखिका हैं। वे कहानी के माध्यम से विभिन्न विषयों को खोलती हैं। जैसे अगले प्रसंग में वे बताती हैं कि उनका सुरक्षाकर्मी देवता पाण्डेय ही उन्हें गन्दी नीयत से देखता है। तब मानवी शंका जाहिर करती है कि-

"आज विवशता में उसे यह सब झेलना है। पर यह अंगरक्षक है। इसी की नीयत में खोट होगी तो..." [24]

अपने अंगरक्षक की हरकत से नाराज मानवी विचार करती है कि मेरी तरफ से कोई स्वीकृति के बिना देवता पाण्डेय ऐसी नजर से मुझे क्यों देख रहा था। उसने मुझे ऐसी तैसी क्यों समझ लिया। फिर वह विचार करती है कि ऐसे ही बलात्कार में भी होता होगा। लड़कियों की सहमति के बिना होता है फिर भी उन्हें ही समाज में गन्दी नजरों से देखा जाता है। गन्दी हरकत पाण्डेय ने की परन्तु समाज दोष स्त्री को ही देगा। और समाज में देवता पाण्डेय जैसे लोग पवित्र बने घूमते रहेंगे जबकि स्त्री बलात्कार पीड़ित होकर सारे आरोप भी झेलती है। नीरजा जी यह प्रश्न उठाती हैं कि जब बलात्कार में स्त्री शामिल नहीं होती, वह प्रतिकार करती है तो वह अपवित्र कैसे हो गयी? समाज में जो बलात्कार पीड़िता हैं उन्हें लोग हेय नजरों से देखते हैं। जबकि वे खुद बलात्कार का प्रतिकार करती हैं। लेखिका

ने प्रश्न उठाया है कि यदि कोई जानबूझ कर कोई गुनाह करे तो वह दोषी हुआ, बलात्कार में तो स्त्री का कोई दोष नहीं फिर समाज की नजरों मे वह अपवित्र कैसे हो जाती है ? अपवित्र गुनाह करने वाला होता है न कि कोई और । आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करने वाली यमदीप की मुख्य पात्र मानवी स्वयं अपने ऊपर बीते हुए वाकये को बताती है, कि अंगरक्षक देवता पाण्डेय की नीयत में खोट थी । मानवी के पास ऑटो में बैठकर देवता पाण्डेय ने जो राक्षसों वाली हरकत की है ठीक ऐसी ही हरकत समाज में लड़कियों के साथ होती रहती है। नीयत में खोट पुरुष के हो और इज्जत नारियों की जाये, ये तो पितृसत्तात्मक पुरुषवादी नजरिया है। जहाँ नारी का तो अस्तित्व ही नहीं है सिर्फ उपयोग करो वस्तु की तरह । मानवी अपनी घटना को बलात्कार पीड़ितों के साथ तुलना करके बताती है कि देवता पाण्डेय जैसे राक्षसों की ही वजह से इतने अपराध होते हैं। अपराधिनी बन जाती हैं महिलाएँ, अपवित्र समझी जाती हैं।"[25]

लेखिका नीरजा माधवजी ने स्त्री से संबंधित विभिन्न मुद्दों को इस उपन्यास में उठाया है ताकि स्त्री के संघर्ष को नये नजरिए से देखा जा सके। पितृसत्ता के नजरिए में, सोच में परिवर्तन होना चाहिए । स्त्री शिक्षा के माध्यम से जागरुक हो रही है परन्तु पुरुषवादी सोच में परिवर्तन आना आसान नहीं है, क्योंकि कई शताब्दियों से पितृसत्तात्मक सोच समाज में व्याप्त है। उसको बदलने के लिए समय लगेगा। जब लोगों की मानसिकता बन जाती है तो उसे बदलने में समय की आवश्यकता होती है।

नीरजा जी ने यमदीप में मानवी के सहारे नारी के हर मुद्दे को उठाया है, पूरे नारी जगत की आवाज को बुलन्द किया है। उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग सभी वर्गों की बात की गयी है कि किस वर्ग में कितना शोषण होता है नारी का। इस उपन्यास में मुस्लिम महिला के साक्षात्कार के माध्यम से धर्मों में होनेवाली प्रताड़ना को उजागर किया गया है जिसमें सरजूदेवी, नजमा, आ. बेगम निम्न वर्ग की महिलाएँ हैं । इससे स्पष्ट होता है कि समाज के अलग-अलग धरातल पर पितृसत्ता की सोच समाज में घुल गयी है। उसे बदलने के लिए लोगों को शिक्षित व जागरुक होना पड़ेगा। स्त्री पुरुष दोनों बराबर ही हैं। किसी

एक को ही क्यों सजा दी जाती है । " आदमी मजबूरी मे पुलिश की नौकरी कर्ता है । महिलाओ का बहुत शोषण है यहा । यू कह लीजिये की वे न तो परिवार की रह जाती है , न नौकरी की ।न पुरुष बन पाती है , न उनमे महिलापन ही बाकी रहता है । अपने से बड़े अधिकारी की के गलत आचरण की शिकायत आप उसी से कैसे करेंगे ? "[26]

इन्हीं सब दकियानूसी बातों का परिणाम है कि लड़कियों के छोटे गलत कदम का परिणाम है कि उन्हें नारी उद्धारगृह में रहना पड़ता है । क्योंकि लड़की एक बार घर से निकल गयी तो माता-पिता की इज्जत चली जाती है । समाज की वजह से परिवार वाले लड़की को वापस नहीं आने देते । जबकि उसी स्थान पर लड़के को लोग स्वीकार करते हैं । यह मानसिकता बदलनी होगी तभी समाज में समरसता आयेगी । पुरुषों के बराबर स्त्री को भी अधिकार चाहिए क्योंकि स्त्री भी शारीरिक व मानसिक रुप से पुरुष से कम नहीं है । उसे सिर्फ पुरुषवादी सोच से लड़ना है जो कि कई सदियों से समाज के खून में शामिल हो गयी है ।

नारी के अधिकार व वजूद को स्वीकार करते हुए जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में लिखा है कि पुरुष व नारी दोनों बराबर हैं । प्रकृति ने ऐसा ही बनाया है दोनों को । पुरुषवादी सोच ने दोनों में भेद बना दिया -

"तुम भूल गए पुरुषतत्त्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है संबंध बनी, अधिकार और अधिकारी की ।"[27]

डॉ. नीरजा माधव स्त्री विमर्श की यमदीप के माध्यम से हर सतह की तह लेती हं । पितृसत्तात्मक सोच को उजागर करती हैं । पुरुषवादी मापदण्ड में स्त्री को वस्तु समझने की मानसिकता तोड़ने की बात करती हैं । वे यह भी दिखाती हैं कि स्त्री चाहे जिस जाति, धर्म या वर्ग की हो शोषण तो होता ही है । बस सभी के हालात अलग-अलग हैं ।

नीरजा जी यह भी दिखाती हैं कि यमदीप की कथावस्तु में जितने भी पुरुष आये सभी इसी मानसिकता के हैं ऐसा नहीं है। जैसे स्त्रियों में दोनों तरह की मानसिकता

वाले हैं, मानवी और रीतादेवी, उसी तरह पुरुष वर्ग के दूसरे पक्ष को भी दिखाया गया है जो कि स्त्री मुक्ति की वकालत करता है । जैसे तारक है जो मानवी को अपनी बेटी मानता है । निम्न तबके के चायवाले साहूजी भी मानवीय सोच वाले हैं । फिर आई.ए.एस. आनन्द कुमार की मानसिकता तो सबसे अच्छी है। वे दोनों की बराबरी की बात करते हैं व स्त्री मुक्ति की वकालत भी करते हैं । वे मानवी को कहते हैं कि सारे पुरुष एक मानसिकता के नहीं होते हैं । स्त्री व पुरुष में संतुलन होना चाहिए-

"पुरुष केवल शोषण, स्वार्थी या अत्याचारी ही नहीं होता । उसका एक स्वरुप और भी होता है । जब तक उस दूसरे स्वरुप को नारी अच्छी तरह दखने-परखने की ईमानदार कोशिश नहीं करतीहै, तनाव रहता है, दूरी बनी रहती है ।"[28]

आज के समाज में पितृसत्तावादी सोच भले ही समाज में छायी हो परन्तु समाज को समरस कैसे बनाया जा सकता है ऐसा मानने वाले भी कम नहीं हैं । समाज के लिए पुरुष व नारी दोनों बराबर के तत्व हैं, दोनों की अपनी अहमियत है, वर्तमान समय में भले ही पितृवादी सोच हावी हो परन्तु एक दिन ऐसा आयेगा जब समाज में दोनों के लिए समरसता स्थापित होगी । क्योंकि नारी पुरुष दोनों बराबर के तत्त्व हैं । जैसे नारी के लिए पुरुष का साथ जरुरी है उतना ही जरुरी है पुरुष को भी नारी का साथ । लेखिका ने उपन्यास में यह दिखाने की कोशिश की है कि सृष्टि व समाज के लिए सदियों से दोनों बराबर के अधिकारी हैं ।

नीरजा माधवजी नारी के संघर्ष व शोषण को दिखाने के बाद पुरुष से यह स्वीकृति दिखाती है कि सिर्फ पुरुष ही संसाधन का अधिकार नहीं रखता, बल्कि दोनों का संतुलन आवश्यक है ।

"नारी अकेले की क्यों ? क्या पुरुष नारी के सहारे के बिना अस्तित्व बनाए रख सकता है ?.... तो संकट के अंधेरे में भी पुरुष को किसी ममतामयी, प्रेममयी नारी की ही आवश्यकता महसूस होती है । जिसके आलोक में वह अपना मार्ग ढूँढ सके। सच पूछो तो नारी-पुरुष दोनों एक दूसरे के अर्द्धांश हैं । एक-दूसरे में अपनी पूर्णता, अपनी अर्थवत्ता

छिपाए हुए। सम्पूर्ण होने के लिए दोनों अर्द्धांशों का सम्मिलन आवश्यक होता है। सृष्टिचक्र इसी पर आधारित है। इसे नकारना अपने अस्तित्व को नकारना है।"[29]

जिलाधिकारी आनन्दकुमार की इन्हीं बातों से स्त्री-विमर्श का वह मंत्र सामने आता है जो कि सृष्टि व समाज को उन्नति दे सकता है। कथाकार डॉ. नीरजा माधव की रचना का विषय हमेशा ही विशेष रहता है। जिससे मनुष्य मनुष्यता की भलाई हो सके। लेखिका अपने लेखन में समाज के पिछड़े वर्ग व अस्तित्वहीन लोगों की दशा को पात्रों द्वारा उभारती हैं और उनकी आवाज बुलन्द करती हैं। और अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने की अदम्य इच्छा उनकी रचना में दृष्टव्य होती है।

5.4 रात्रिकालीन संसद

नीरजा का यह उपन्यास उनके पूर्ववर्ती उपन्यासों से ठीक अलग उपन्यास है। यह उपन्यास हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपना अलग महत्त्व रखता है क्योंकि उपन्यास की चली आ रही परिपाटी से यह बिल्कुल अलग है। इस उपन्यास में नीरजा माधव जी ने आकाशवाणी डायरेक्टर की कहानी को कहा है। रात्रिकालीन संसद, उपन्यास की मुख्य पात्र आमोदनी है जो आकाशवाणी में असिस्टंट डायरेक्टर पद पर कार्यरत है। लेखिका ने उपन्यास में आतंकी घटनाओं से उत्पन्न दर्दभरी स्थितियों का चित्रण किया है। एक सी.डी. कैसेट में बम विस्फोट की घटना को कैद कर रखा है। यह सब आकाशवाणी से सुनते हैं तो पाठक दर्दनाक हादसे को सुनकर द्रवित हो गये हैं।

यह उपन्यास 12 खण्डों में लिखा गया है। इसके चौथे खण्ड में आकाशवाणी की डायरेक्टर आमोदिनी, आफताब आलम और मुकुल घोष में बातचीत चलती है। मुकुल व आफताब के चले जाने के बाद आमोदिनी अपने अतीत की बातों को याद करती है। अपने जीवन की मर्मस्पर्शी घटनाओं को याद करती है वह एक निचले मध्यमवर्गीय परिवार से आती है। वह दो बहन व एक भाई के साथ रहती थी। परिवार की पूरी जिम्मेदारी पिताजी अकेले निभा रहे थे। वह एक मात्र कमाने वाले थे। आमोदिनी को जब आकाशवाणी में नौकरी मिली तो वह बहुत खुश हुई। उसने योजना बनाई कि अब पापा व हम दोनों नौकरी

करेंगे तो भाई व बहनों की पढ़ाई अच्छे स्कूल व कॉलेज में हो जायेगी। वह बहुत खुश होकर अपने पापा से नौकरी मिलने की बात करती है। उसकी माँ ने आज घर में मिठाई बनाई है और मंदिर के दर्शन भी जायेगी।

आमोदिनी अपने पापा से कहती है -

"उड़ती हुई वह माँ, पिताजी के सामने आ खड़ी हुई थी- 'पापा, आज से आप के सारे संकट खत्म। आप अभी तक अकेले थे, अब मैं आपकी बेटी नहीं बल्कि...। उसने अपने को नियंत्रित करते हुए गम्भीरता से कहा, पापा अब घर की कुछ जिम्मेदारियाँ मैं उठा लूँगी तो आपका बोझ हल्का हो सकेगा। अरिहंत और शत्रुघ्न के साथ-साथ शालिनी व रागिनी भी अच्छे स्कूलों में पढ़ सकेगी।"[30]

आमोदिनी को उम्मीद थी कि उसके पिता सुन कर खुश होंगे, उसे गले से लगा लेंगे। परन्तु पितृसत्ता की मानसिकता समाज में छायी हुई है। इसी कारण लोग लड़का-लड़की में अन्तर करते हैं। आमोदिनी को यही बाद नाखुश कर गयी थी क्योंकि पिताजी ने कहा कि मैं लड़कों की नौकरी के लिए देवी-देवताओं से मन्नत माँगूगा। जबकि उन्होंने लड़की के लिए मन्नत नहीं मांगी थी। लेखिका ने बच्चों की आपस की बातों के माध्यम से पितृसत्ता के समाज को उद्घाटित किया है कि समाज में लड़कियों से ज्यादा लड़कों की कद्र की जाती है जबकि आमोदिनी एक सुशिक्षित लड़की है। वह लिंगभेद को समाप्त करने की बात कहती है। परन्तु समाज की कुत्सित सोच की वजह से उसके प्रयास को अनदेखा कर दिया जाता है। उसके पापा उसकी शादी उससे बिन पूछे ही तय कर आते हैं। जबकि वह अनमेल विवाह था।

"चुपचाप अपने से 10 वर्ष बड़े देवाशीष के साथ ब्याह कर चली गयी वह। रेलवे में अच्छे पद पर कार्यरत देवाशीष। पहले ही रात मुँह दिखाई दिया था- मेरे पूर्व जीवन में हस्तक्षेप नहीं करोगी तुम। तुम्हें तुम्हारा अधिकार मिलेगा। तुम्हारा स्थान अलग है और आजरा का अलग। परिवार वाले तुम्हें पाकर खुश रहें, मुझे उसके साथ खुश रहने दो। आमोदिनी जैसे खौलते कडाह में गिर पड़ी थी। पूरे बदन पर जलते हुए बड़े-बड़े फफोले

। देवाशीष कमरे के बाहर जा चुके थे। चौथे दिन पिताजी रिश्तेदारों के संग आए तो वह हठ कर बैठी...पापा, मुझे ले चलिए यहाँ से।"[31]

लेखिका ने आमोदिनी के माध्यम से समाज की महिलाओं की आवाज बुलन्द की है। साथ-साथ ही अपने अधिकारों के लिए शोषण का प्रतिकार, विद्रोह करने की बात भी दिखाती है। वे दिखाती हैं कि पिता हो या पति हो, नारी का रिश्ता किसी से भी हो, शोषण रिश्तों से नहीं होता है, शोषण रिश्तेदारों की मानसिकता की वजह से होता है। सदियों से चली आ रही नारियों को कमतर आँकने की प्रवृत्ति से नारी का शोषण होता है। उसी मानसिकता के खिलाफ विद्रोह करने वाली आमोदिनी लेखिका की सांकेतिक प्रेरणा है। नारी को बिना विद्रोह किये अपने अधिकारों की प्राप्ति नहीं हो पायेगी। आमोदिनी शादी जैसे बंधन को ठुकरा देती है। अपने पति से कहती है कि- "प्लीज़, मुझे स्पर्श न करिए। पापा को सोचना चाहिए था, आपके परिवार वालों को सोचा चाहिए था, आप को भी सोचना चाहिए था। आखिर जीवन तो मेरा ही खराब हुआ न?"[32]

लेखिका ने आमोदिनी के माध्यम से दर्शाया है कि समाज की कुंठित मानसिकता से नारी जगत का अस्तित्व निर्माण आसान नहीं है। वे जब तक अपने को लड़ने के लिए तैयार नहीं करेगी, तब तक अपने अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती है।

रात्रिकालीन संसद उपन्यास में सात भाग में लेखिका ने एक अन्य स्त्री चेतना की बहस उठाई है कि पितृसत्तात्मक और ब्राह्मणवादी सोच के वशीभूत अपना समाज कभी भी महिला को वह अधिकार और हक नहीं देगा। उसके लिए नारी को विद्रोह करना होगा। बिन लड़े, पुरुषवादी सोच को बदलना आसान नहीं है। इस उपन्यास में दूसरा जो पात्र है वह है मानसी। मानसी एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला है। उसे एक मुस्लिम लड़के से प्रेम हो जाता है। दोनों एक दूसरे को खूब पसन्द करते थे। हालांकि दोनों अलग-अलग धर्म के हैं, लड़का मुस्लिम धर्म का है। रेहान को हिन्दू धर्म से कोई दिक्कत नहीं थी। यह बात मानसी को बहुत पसन्द आती है। वह रेहान से पूछती भी है कि यदि हम दोनों शादी करते हैं तो हम दोनों के अलग-अलग धर्म होने से कोई दिक्कत तो नहीं आयेगी ? तब रेहान बताता

है कि मुझे कोई दिक्कत नहीं है। शादी के बाद धर्म परिवर्तन जैसी कोई चीज नहीं चाहता हूँ। हम दोनों ऐसे ही रहेंगे। परन्तु शादी के बाद रेहान के विचारों में बहुत परिवर्तन आ जाता है। मानसी अपनी दोस्त आमोदिनी को रेहान के बारे में बताती है कि-

"रेहान भी अकसर आता था इस्कॉन मंदिर में अपने एक हिन्दू दोस्त के साथ। वहीं पर मेरी पहचान हुई थी उससे। लगा, भगवान कृष्ण ने उसे अपना सौन्दर्य देकर मेरे लिए भेज दिया है। वह भी तो बातें ऐसी ही करता था। लगता ही नहीं था कि उसके अन्दर कहीं से कोई अपनी धार्मिक कट्टरता है भी। मेरे साथ राधा-कृष्ण पर वैसी ही चर्चा करता, जैसा कोई प्रबुद्ध हिन्दू कर सकता है। उसने भी पापा-मम्मी से वादा किया था कि वह मुझ पर अपना धर्म थोपने की कोई कोशिश नहीं करेगा। उसने तो यह भरोसा भी दिलाया था कि उसकी भी आस्था भगवान कृष्ण में हो गयी है। जल्दी ही अपना कोई अलग मकान लेकर मैं मानसी के साथ रहूँगा।"[33]

मानसी अपनी दोस्त आमोदिनी से बिना किसी संकोच से कहती है। वह कुछ भी छिपाना नहीं चाहती है। वह बताती है कि रेहान उससे कैसी-कैसी बातें करता था। रेहान को मेरी माथे की बिंदिया राथा के चरणों में लगा महावर लगता था। जो चरण-स्पर्श करते हुए माथे पर लग गयी है। वह मेरी पसन्द की सारी बातें कहता था। परन्तु वह वैसा नहीं था। जैसी बातें वह तब करता था, मन्दिर में तो कोई भी जा सकता है। कौन किस इरादे से जा रहा है यह बात मायने रखती है। ऐसे किसी को देखकर उसका इरादा नहीं जाना जा सकता है। आमोदिनी आगे के लिए बड़ी उत्सुकता के साथ पूछ रही थी, मानसी बताती है कि मेरे मम्मी-पापा का मन नहीं था। मैंने जिद करके मम्मी-पापा को मनाया। रेहान भी उनको आश्वासन देता था कि मुझे धर्म को लेकर कोई दिक्कत नहीं है। मैं अलग मकान लेकर मानसी के साथ रहूँगा। इन्हीं सब बातों में आकर मानसी रेहान से कोर्ट मैरेज कर लेती है। उसको उम्मीद थी कि रेहान धर्म को लेकर उसकी जो मानसिकता है वह बदलेगी नहीं। जैसा व्यवहार वह अभी कर रहा है वैसा ही व्यवहार वह करेगा। मानसी की यह सोच शादी के दूसरे दिन ही गलत होने लगी। जब मानसी भगवान कृष्ण

की मूर्ती व पेइन्टिंग को रुम में सजाने लगती है तो रेहान उसे रोकता है कि मम्मी-पापा को मनाना है अभी । तब मानसी चकित हो जाती है । तो रेहान कहता है कि कुछ समय के लिए समझौता कर लो। तब मानसी कहती है कि जब तुम्हारे घर वालों को पता है कि हमारे धर्म के बारे में उन्हें कोई दिक्कत नहीं है तो फिर ऐसा क्यों? मानसी परेशान हो जाती है । क्योंकि रेहान उसे धोखा देता है । उसे लगता है कि रेहान ने उससे और घरवालों को अलग-अलग बातें की है। मानसी गुस्से व आवेश में आकर रेहान से बात करती है । वह बताती है कि-

"मैं चौंक पड़ी थी, रेहान का यह परिवर्तन अप्रत्याशित था । मैंने सशंकित होकर पूछा, पर रेहान, तुमने तो कहा था कि मेरे ऊपर तुम लोग किसी तरह की धार्मिक बंदिशें नहीं लादोगे?

यह बंदिश नहीं है मानसी, बस कुछ समय के लिए समझौता, फिर सब ठीक हो जाएगा ।

पर तुम्हारे घरवालों को तो सब मालूम है , फिर यह समय की सीमा और समझौता, क्या है ये सब ? "[34]

मानसी एक सुशिक्षित, धार्मिक, सनातनी महिला है । उसने दूसरे धर्म में शादी की थी तो रेहान से सब बातें पूछ ली थी । रेहान ने कहा था कि तुम्हारा नाम नहीं बदला जायेगा, न ही धर्म बदलने की जरुरत है । परन्तु शादी के दूसरे दिन ही रेहान की नियति व मानी गयी बातों में अन्तर दिखाई देने लगा था । मानसी अपनी दोस्त आमोदिनी को बताती है कि इन्हीं बातों को लेकर मैं रेहान पर उग्र हो गयी । वह कहता था कि सब्र रखो, मैं तुम्हारे साथ हूँ । मैंने बोला था कि तुम्हारे साथ होने की वजह से मैंने यह कदम उठाया है । परन्तु अब मुझे धोखा मिल रहा है। मानसी व रेहान दोनों अलग-अलग संस्कृति के हैं । दोनों के रीति-रिवाज अलग हैं । रेहान ने झूठे आश्वासन देकर मानसी से शादी बना ली थी । और अन्ततः रेहान के मुँह से वह पितृसत्तात्मक बात निकल ही आयी जो हर पुरुष की मानसिकता को दर्शाता है । स्त्री अपने अधिकारों की बात करे तो समाज, जाति, धर्म आदि

की दुहाई देकर चुप करा दिया जाता है। परन्तु मानसी चुप रहने वाली लड़की नहीं है। लेखिका डॉ. नीरजा जी ने मानसी का चरित्र भारतीय नारियों के लिए आदर्श रुप में स्थापित किया है। आधुनिक समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत चरित्र है। नारी को शोषण, उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए जैसा कि मानसी करती है -

"उसने मुझे एक धक्का दिया और बोला था, हम लोगों के यहाँ औरतों को सिर पर नहीं बैठाते। अपनी हद में रहना सीखो। जैसा कहा जा रहा है वैसा करो।

मेरे मम्मी-पापा को बुला दो, मैं यहाँ नहीं रहना चाहती।"[35]

डॉ. नीरजा जी की यह बात मानवीय शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलन्द करती है। वह चाहती है कि जिस धर्म, घर, परिवार में नारी के लिए ऐसे विचार रखते हों, वहाँ से निकल जाना चाहिए। जीवन में यदि कभी कोई गलती करो तो उसे भूल सुधार के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसा सभी को मौका मिलना चाहिए। मानसी रेहान के घर व उसके साथ तो रहना चाहती है परन्तु अपना अस्तित्व खोकर नहीं। उसे वहाँ धर्म बदलने को कहा जाता है, उसे मानसी से 'महेजबीं' बनाना चाह रहे थे परन्तु वह अपनी पहचान खोना नहीं चाहती है। वह सवाल करती है कि यही व्यवहार करने के लिए लाये थे मुझे। वह रेहान और उसके घर को छोड़कर चली जाती है। क्योंकि हर औरत का स्वाभिमान होता है। कोई अपना अस्तित्व खोना नहीं चाहता है। और मानसी के साथ तो धोखा किया जाता है। उसे अपनी पहचान खोकर समझौता करने को कहा जाता है। इसी समझौते से ही तो पुरुष वर्ग-समाज नारी को अपने हिसाब से चलाता है।

कभी-कभी नारियाँ समझौता कर लेती हैं। परन्तु फिर भी वे खुश नहीं रह पाती हैं। उन्हें एक समझौता चलाने के लिए फिर-फिर कई समझौते करने पड़ते हैं। दोनों नारी पात्र आमोदिनी व मानसी बातें करती हैं। स्त्री के जीवन को लेकर आमोदिनी पूछती है कि दूसरी शादी क्यों नहीं की? तो मानसी पुरुषप्रधान सोच को शादी न करने का कारण बताती है। वह कहती है कि एक रेहान नहीं है इस समाज में, सभी रेहान ही हैं।

"ना ना आमोदिनी जी, मैंने ही तौबा कर लिया। ये शादी ब्याह का झंझट? अरे,थोड़ा उन्नीस रेहान या बीस रेहान। पुरुष मानसिकता तो वही रहेगी न ? मानसी ने कड़वाहट के साथ कहा। ... जिसे मिल गया, वह बहुत अच्छा कहता है, अन्यथा रोते-झींकते ही तो बीतती है अधिकांश औरतों की जिंदगी। पुरुषों की हाँ में हाँ मिलाओ तो आप बहुत अच्छी और अपने स्वाभिमान के साथ जीना चाहते हो तो जिद्दी, मनबढ़ औरत का खिताब। नो वे आउट।"[36]

यह आमोदिनी व मानसी की कहानी समाज में आम नारी की कहानी है। नीरजा जी ने जिन दोनों पात्रों का गठन किया है वे समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज के लिए आदर्श व प्रेरणा स्रोत भी हैं। मानसी पुरानी कुंठित सोच के खिलाफ विद्रोह करती है। क्योंकि वह आधुनिक नारी है। वह किसी भी शोषण व अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने वाली हिम्मत रखती है। किसी भी संकट से वह मुक्त क्षेत्र चाहती है।

5.5 देनपा - तिब्बत की डायरी

डॉ॰ 'डायरी शैली' में लिखा गया यह उपन्यास अपने आप में अनूठा है। इसमें तिब्बत की व्यथित नारी का इतिहास है। इसमें डॉ. नीरजा माधव ने भारत में अप्रवासी लोग जो रहते हैं, जो तिब्बत से आये हैं; देश में लगभग हर शहर में वे देखे जा सकते हैं। उनके समाज, देश व क्षेत्र की आवाज उठाना और चीन द्वारा प्रताड़ित तिब्बत महिलाओं की दशा व अत्याचार को साहित्य में परिलक्षित किया है। डॉ. नीरजा माधव के देनपा उपन्यास में तिब्बत का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सांगोपांग एवं प्रकृति का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। चीनी आक्रमण के बाद तिब्बत नरक बन गया था। वहाँ की महिलाओं की दशा खराब होने लगी। उन्हीं महिलाओं में से इस उपन्यास की नायिका देनपा है जो अपने तिब्बतीय जीवन अतीत की बातें अपनी मित्र देवयानी के सामने उघाड़ती है। तिब्बत की महिलाओं के जीवन को चीनी सैनिकों ने प्रताड़ित कर के बहुत दयनीय बना दिया था। इस कारण वे भारत में शरणार्थी बनकर रहते हैं। वैश्विक स्तर पर

माधवजी ने स्त्री की व्यथा को उठाया है । देनपा एक कामकाजी महिला है, जो गलत परम्परा व गलत रुढ़ियों को नहीं मानती है। और तिब्बत में महिलाओं की पीड़ा व शोषण को प्रतीक रुप से प्रस्तुत करती है। इस उपन्यास में प्रेम कहानी भी है जो कि असफल है। थिनले और लोब्जंग जैसी योद्धा नारी पात्र हैं जो चीनी सैनिकों से लड़ते हुए दिखाई देते हैं । वह अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए अपने बेटे को तैयार करती है। एक पात्र हा 'मावो' जो वृद्ध होकर भी चीनी सैनिकों से खेती-बाड़ी के लगाने के खिलाफ लड़ती है।

तिब्बतियों की संस्कृति भारत से अलग है। वहाँ की विवाह प्रथा भी अलग है। जैसे कि भारत में शादी के बाद स्त्री सिर्फ अपने पति के साथ ही शारीरिक सम्बन्ध रखती हैं, परन्तु तिब्बत में ऐसा नहीं है, वहाँ पर स्त्री को शादी के बाद घर के अपने पति के भाइयों के साथ भी संबंध बनाए रखने पड़ते हैं। ऐसी परम्परा पुरानी हो चुकी है। अब की स्त्रियाँ ऐसा करने को तैयार नहीं हैं। वे इस परम्परा के विरोध में रहती हैं। देनपा उपन्यास की नायिका 'लोये' है। वह 'श्यू' नामक चीनी लड़के से प्रेम करती है और शादी करना चाहती है। परन्तु उसके माता-पिता इसके विरोधी थे। परिणामस्वरुप लोये की शादी अन्य तिब्बति लड़के जिग्मे के साथ हो जाती है। जिग्मे का जुड़वा भाई था पिमा। जिग्मे के कहा लोये को उसके भाई के साथ संबंध रखना पड़ेगा। परन्तु लोये को यह बात स्वीकार नहीं होती है। इस सम्बन्ध में देवयानी का कहना है कि- "जिग्मे की ज्यादतियों से उबकर लोये अपने छोटे भाई सोनम को लेकर एक रात घर छोड़कर निकल पड़ी थी। सिर मुड़ा भिक्षुणी बन गयी थी। और लुकते-छिपते भारत पहुँच गयी थी।"[37]

लोये अपने भाई के साथ अब 'भोट संस्कृति शिक्षा संस्थान' में रह रहे तिब्बती शरणार्थी बच्चों की मठ में देखभाल करने वाली भिक्षुणी है। लोये लोगों के बीच 'माई दोलमा' नाम लोग बड़े स्नेह से बुलाते थे। अब यह एक कहानी बन गई है भाई दोलमा की कहानी। डॉ. नीरजा माधव जी वैश्विक स्तर पर नारी व्यथा की आवाज को बुलन्द कर रही थी। क्योंकि व्यथा सभी की होती है। दुख-दर्द की कोई सीमा रेखा नहीं होती है। नीरजा

जी ने तिब्बती महिलाओं की प्रताड़ना को ही नहीं दर्शाया है बल्कि उनकी विद्रोही प्रवृत्ति को भी परिणति दी है।

भारत देश हो या कोई भी देश, किसी भी कारण से दुःप्रभावित होता है तो सबसे ज्यादा दुख नारियों को भोगना पड़ता है। नारी परिवार व समाज का आधार होती है। वह हर घटना में बलि का बकरा बनती दिखायी देती है। क्योंकि समाज व परिवार की धूरी वही है। यदि वह प्रभावित होती है तो सारी सामाजिक प्रक्रिया प्रभावित होती रहती है। चीनी सैनिकों के आतंक के कारण देनपा अपने बच्चों से बिछड़ जाती है। चीनी सैनिकों द्वारा दी जाने वाली यातनाएँ नारी के अस्तित्व को समाप्त कर देती हैं। वे किसी को भी नहीं छोड़ते हैं। नर-नारी या बच्चे सभी से निर्दयतापूर्वक व्यवहार करते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि तिब्बत में संस्कृति परिवर्तन हो जाये। वहाँ की धार्मिक प्रवृत्ति को चीनी शासन समाप्त करना चाहता है। और तिब्बती जन अलग-अलग देश में शरण लेकर अपने बच्चों को सांस्कृतिक शिक्षा -दीक्षा को जिंदा रखते हुए अहिंसक प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि एक दिन तिब्बत उन्हें मिल जायेगा।

उपन्यास की नारी पात्र है 'थिनले'। चीनी सैनिक इस प्रकार की औरतों का जीवन नरक बना देते हैं। थिनले के माता-पिता जेल में रहकर यातनाएँ झेल रहे हैं जबकि थिनले बारह रहकर। थिनले का विचार है कि सैनिकों के बलात्कार से उत्पन्न बच्चों को मैं तिब्बती संस्कार से शिक्षा नहीं दूँगी बल्कि यहीं पढ़ाऊँगी और सैनिक बनाकर अपने बच्चे को उन सैनिकों की ही हत्या करवाऊँगी। वह कहती है कि-

"इसे यहीं गोनपा में पढ़ाऊँगी। पढ़ लेगा तो एक बन्दूक दूँगी और यह ले जाकर अपने सैनिक बापों को मारेगा। मेरा कलेजा ठंडा होगा।

यह चीनी सैनिकों का ही बेटा है साब...

क्या कहेगा ? पूरी दुनिया ही जान रही है। हम लोगों को छोटी-छोटी बातों में पकड़कर ले जाते हैं ये लोग, जोलो में ठूँस देते हैं। जानवर की तरह। पिछली बार जब ले गये थे तो जेल में भी जगह नहीं थी।"[38]

इसी तरह एक अन्य अध्यापिका मैडम 'क्वाप' भी चीनी दहशत का शिकार हो चुकी थी । उनका बच्चा भी उसी स्कूल में पढ़ता था क्योंकि वह भी अपने बच्चे को वहीं पढ़ाकर चीनी सैनिकों से बदला लेना चाहती है । ये दोनों तिब्बती स्त्रियाँ हैं जो चीनी सेना से बहुत प्रताड़ित हैं । और अपने तरीके से लड़ाई लड़ रही हैं । क्योंकि इन स्त्रियों की जिन्दगी नरक इन्हीं चीनी सैनिकों ने बनाई है । इस सम्बन्ध में रमणिका गुप्ता कहती हैं कि किसी भी आतंकी घटना में सबसे ज्याता प्रभावित होती है वहाँ की स्त्रियाँ । औरतों की इसी जिजीविषा पर बताती हैं कि-

"औरत की नियति भी हार कर बैठ जाना नहीं, गिरकर फिर उठना है ।" [39]

थिनले मैडम व क्वय मैडम दोनों देश के प्रति अपना दायित्व निभा रही हैं । स्त्री होने पर भी इन्हें कहीं से कमजोर नहीं कहा जा सकता है । इसी तरह एक और महिला है मावो, वह भी वृद्ध हो गयी है परन्तु संघर्ष कर रही है । वह तिब्बतियों के पक्ष में खड़ी रहती है । अत्याचार के प्रति विद्रोह करती है । बातचीत का एक अंश देखते हैं-

" 'बीमारी को खुद डर लगता होगा आपसे । कैसे लड़ूँ इस बहादुर महिला से ?'

वो खेती का टेक्स लेने जब भी सरकारी कारिन्द आते हैं, सब मुझे आगे कर देते हैं। मैं भी डरती नहीं, बहस कर लेती हूँ, बिना डरे । खेती हम करें, और टैक्स के नाम पर हमारा ही खून चूसे ये लोग, यह तो खूब रही ।"[40]

लेखिका ने मावो के वृद्ध महिला पात्र द्वारा स्त्री की संघर्ष के प्रति मजबूती को दिखाया है । स्त्री कभी कमजोर नहीं होती । जब भी मौका मिला, स्त्री का संघर्ष कभी कमजोर नहीं रहा है ।

ऐसा कहा जाता है कि स्त्रियाँ कमजोर होती हैं । जल्द ही रोने लगती हैं । कोई दुर्घटना होती है तो उनका धैर्य टूट जाता है । ऐसी नकली बातों का जवाब नीरजा माधव ने जम्पा की बड़ी दीदी का चरित्र रचकर दिया है । जो मरने से भी नहीं डरती है । वे दूसरे दिशों में ठिकाना बनाकर अपनी जान व शिक्षा संस्कृति का संवर्धन कर रहे हैं । इन्हीं में से

एक है जम्पा की बड़ी दीदी। वे कहती हैं कि तिब्बत मैं नहीं छोड़ूँगी । "क्या पूरा तिब्बत हम खाली कर उन्हें सौंप जायें ? यह कोई बात हुई ? मरना होगा तो कहीं भी मर जायेंगे । तिब्बत में मरेंगे तो कम-से-कम अपनी मिट्टी मिलेगी ।"[41]

एक और चीनी सैनिकों का आतंक रुकने का नाम नहीं ले रहा था, वहीं तिब्बती भारत की ओर पलायन करते हुए दिखाई दे रहे थे । उन्हीं में से एक महिला है जो पुरुषों पर भी भारी है । इन महिलाओं से पता चलता है कि चीनी आक्रान्त के खिलाफ महिलाएँ खूब संघर्ष कर रही हैं । वहाँ की महिलाओं में विद्रोह व आक्रोश के गुण मिलते हैं । थिनले भी चीनी सैनिकों के आतंक से भयभीत नहीं है । वह आत्मविश्वास से भरी है, कमजोर महिला नहीं है कि थोड़ी-सी परेशानी में ही टूट जायेगी । परेशानियों के सम्बन्ध में वह बताती है कि उन्हें परेशानी से अब डर नहीं लगता है ।

"थिनले हाथ से अपने सीने पर ठोक-ठोक कर बता रही थी । मैंने उसे रोका..

...

वो आप लोग सोचते होंगे गेला, हम लोग तो परेशानियों के लिए पैदा हुए हैं । और लिए दिये मर जायेंगे । इस बीच जो भी गलत करेगा, उसे भी मार डालेंगे ।

थिनले का सीधा सपाट बयान था ।"[42]

थिनले स्त्री होकर इतने आत्मविश्वास से भरी है कि ऐसा लगता है कि यह कोई वीर सैनिक है ।

तिब्बत की महिलाएँ समझ गयी हैं कि अब हार कर नहीं प्राप्त कर सकते हैं, मार कर ही तिब्बत प्राप्त कर सकते हैं । वे जानती हैं कि चीनी लोग तिब्बत पर अपना शिकंजा मजबूत करते जा रहे हैं। अहिंसा से वे हमें आजाद करेंगे नहीं । लड़कर ही हम प्राप्त कर सकते हैं । इतना संघर्ष महिलाओं में भरा है, अपने अस्तित्व व देश के प्रति । तिब्बतियों को उम्मीद है कि एक दिन ऐसा आयेगा कि हमें तिब्बत मिल जायेगा । फिर हम लोग पहले की तरह धर्म व अहिंसा के साथ जीवनयापन करेंगे । इसी सकारात्मकता के साथ तिब्बत के अंदर व तिब्बत के बाहर वे अपनी सभ्यता व संस्कृति को संचित कर रहे हैं ।

5.6 गेशेजम्पा

चीन की विध्वन्सकारी नीतियों के कारण तिब्बत के लोग वहाँ से पलायन करते जा रहे हैं। चीन चाहता है कि धार्मिक प्रवृत्ति में परिवर्तन हो। तिब्बत के लोग धर्म और अहिंसा के पुजारी हैं। वे चीन से हथियार के साथ लड नहीं सकते हैं। अहिंसा से वे चीनी सैनिकों के सामने कुछ नही कर सकते हैं। और चीनी तानाशाही ऐसी है कि वह तिब्बत को पुनःस्थापना के नाम पर यहाँ की सभ्यता व संस्कृति को नष्ट कर देना चाहते हैं। वहाँ के लोग चीनी द्वारा आरोपित शिक्षा को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। तीन तिब्बती बच्चों को पढ़ा लिखाकर सैनिक बनाता है और तिब्बतियों के खिलाफ लगा देता है। अतः तिब्बत के युवावर्ग तिब्बत की सभ्यता व संस्कृति को बचाने में नहीं बल्कि उन्हें समाप्त करने में चीनियों की मदद करते हैं। इसीलिए तिब्बत के लोग अपने बच्चों को चीनी सैनिकों से छिपाकर तिब्बत से पलायन करते जा रहे हैं। भारत जैसे देश में आकर अपना शिक्षा का केन्द्र चला रहे हैं और अपनी संस्कृति को रक्षित कर रहे हैं।

भारत में रहकर 'गेशेजम्पा' नामक युवक सारनाथ में एक शिक्षण संस्था का अध्यक्ष हो जाता है। अपने तिब्बत के शिक्षा, सभ्यता व साहित्य के लुप्तप्राय होने से पहले संचित करने में लगा है। भारत में रहने के लिए भारत की भाषा सीखते है, विश्व की भाषा अंग्रेजी सीखने व अपनी मूल भाषा तिब्बती भी सीखनी रहती है। अतः तिब्बतियों को कम से कम तीन भाषा का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। तिब्बत छोड़कर आये वहाँ के बच्चों को व बड़ों को भी अपना घर, गाँव, माता-पिता बहुत याद आते हैं। बच्चे जब कम उम्र में चीनी सैनिकों से छुपकर भारत आते हैं तो वे बहुत रोते हैं।

उपन्यास की प्रमुख पात्र देवयानी पर गेशे जम्पा का अमिट विश्वास है। इससे कुछ भी गोपनीय नहीं रखते हैं। देवयानी के साथ गेशेजम्पा की शिक्षण संस्थान से लेकर तिब्बत तक की बातों पर चर्चा होती है। उपन्यास के नायक गेशे जम्पा को चीनी षडयन्त्र करके बुलाना चाहते थे। उनके पिता से पत्र लिखवाया जाता है कि मैं बहुत बीमार हूँ, आ

जाओ। ताकि गेशेजम्पा भावुकता में आकर तिब्बत आ जाये और सारनाथ में अपनी तिब्बती शिक्षा व संस्कृति को जोड़ने का जो प्रयास चल रहा है वह टूट जाये। ऐसी ही गम्भीर बातें देवयानी और गेशेजम्पा की होती हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. वृजबाला सिंह का कहना है कि - "प्रस्तुत उपन्यास में नारी की विवशता एवं उसकी बेचारगी को स्त्री पात्र देवयानी के माध्यम से व्यक्त किया गया है । समाज में नारी को अपेक्षित महत्त्व कभी नहीं मिला। आदर्श नारियों को भी समाज ने स्वस्थ दृष्टि से नही पसंद किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि नारी का जीन खुद उसके लिए बोझ बनकर कर गया। वह घुट-घुट कर जीती रही।"[43]

पूरे विश्व में सत्ता के लिए जब मानवीयता का पतन होता है तो प्रजा को गुलामों की तरह जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है। भारत में अंग्रेजों के शासन काल में भी ऐसा ही हुआ था। लगभग वही स्थिति अब तिब्बत की भी हो रही है। चीन की विस्तारवादी नीति के चलते तिब्बत की त्रासदी का एक छोटा-सा उदाहरण एक तिब्बती महिला 'लोब्जंग' का कथन है जो कि तिब्बतियों की स्वतंत्रता के लिए विद्रोही स्वर उठाती है। बताती है कि कैसे रणनीति के माध्यम से तिब्बत की स्त्रियों, बच्चों के साथ दमनकारी योजनाएँ बनाकर हम लोगों की संस्कृति को समाप्त कर देना चाहते हैं। देवयानी का भाई दीपेश जब चीनी सैनिकों के द्वारा सुरक्षा दिये जाने की बात कहता है तो लोब्जंग दीपेश को वहाँ हो रहे शोषण की बात बताती है।

" 'ऐसा नहीं है भाईसाहब। स्त्रियों, बच्चों और लामाओं के साथ उनका दुर्व्यवहार दूसरे ढंग का होता है।' ढोढपू दुखी स्वर से बोल पड़ा।

'वहाँ हमारी प्रजाति समाप्त करने के लिए लड़कियों की शादी जबरन उन लोगों के साथ कर दी जाती है। बच्चा पैदा होता है तो ठीक, यदि लड़की है तो समाप्त कर दिया जाता है और लड़का होता है तो अपनी सेना में भर्ती कर लिया जाता है। हम तिब्बती हैं तो तिब्बती से ही शादी बनाएँगे कि उन लोगों से ?' इस बार लोब्जंग का उत्तर दीपेश को चुप करा गया था।"[44]

तिब्बतियों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए आवाज उठायी तो उनकी आवाज को इस तरह से दबाया जा रहा था। उनकी कई पीढ़ियों को समाप्त किया जा रहा था। इन्हीं तमाम कारणोंसे तिब्बत के लोग अपना देश छोड़कर पलायन को मजबूर हो रहे थे। इसी विस्थापित हुए बच्चों के स्कूल में देवयानी अध्यापक है। जहाँ पर शरणार्थी बच्चों को पढ़ाती है। मठ के प्रमुख गेशेजम्पा से उसकी खूब बनती है। यह बात भाई दीपेश को अच्छी नहीं लगती थी। देवयानी को लगता है कि गेशेजम्पा को ऑफिस में आते जाते चौकीदार ने देखा होगा। उसी ने कुछ अनाप-शनाप बताया होगा। वह सोचती है कि किसी औरत को लोगों की नजरों में गिराने के लिए चरित्रहीनता का आरोप सबसे आसान है। स्त्रियों के खिलाफ पुरुषों का यह हथियार सबसे कारगर है। औरत होना कितना मुश्किल है। वह कहती है कि-

"उफ, हम औरतें कुछ भी हो जाएँ, कितने भी बड़े पद पर हों या उम्र की किसी भी दहलीज पर हों, औरत होने से बाज नहीं आते हम। हमारा औरत होना सभी गुणों पर भारी पड़ता है और हमें दुर्बल बनाता है। हम डरते हैं अपने औरतपन से, क्योंकि वही सबसे आसान बिंदु बनता है लोगों के सामाजिक प्रहार का।"[45]

इस प्रकार पितृसत्तात्मक सोच को देवयानी दिखाती है कि यह आरोप सिर्फ एक भाई का है ऐसा नहीं है। यह सोच समाज के पुरुषप्रधघान मानसिकता की उपज है। एक स्त्री हमेशा ही लोगों के लिए गलत होती है। क्योंकि वह समाज में पुरुषों के बराबर नहीं है। लेखिका नीरजा माधव अपने उपन्यास गेशेजम्पा में देवयानी के माध्यम से समाज की दोहरी मानसिकता के सम्बन्ध में बताया है कि स्त्री थोड़ा भी स्वतंत्र रुप से रहने लगी तो पुरुषों की नजर में वह सहन नहीं होता है। देवयानी के माध्यम से अपने भाई समेत घरवालों की कुण्ठित मानसिकता, पितृसत्तात्मक समाज की संकुचित मानसिकता को बताया है। लेखिका ने प्रेरणास्वरुप देवयानी की आधुनिक छवि का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत किया है।

पितृसत्ता की सदियों से चली आ रही परम्परा का निर्वहन आधुनिक नारी के लिए सम्भव नहीं है। पहले स्त्री को एक वस्तु समझा जाता था। उसे समाज में पुरुष के बाद दूसरे दर्जे का स्थान प्राप्त था। पुरुष सर्वोपरी था। परन्तु आधुनिक नारी अपने समानता के अस्तित्व को लेकर जागरुक है। वह अन्यायपूर्ण व्यवहार अब सहन नहीं कर सकती है।

गेशेजम्पा उपन्यास की नारी पात्र है लोये। वह तिब्बत में सदियों से प्रचलित अभद्र रीति का विरोध करती है। वह विवाह के उपरान्त अपने पति के भाईयों के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने की रीति के प्रति अपना विरोध दिखाती है। वह अपने पति जिग्मे से सवाल करती है कि-

"क्या तीनों भाइयों की अलग-अलग पत्नियाँ नहीं हो सकती?... मेरी इच्छा या अनिच्छा का कोई महत्त्व नहीं है आपकी दृष्टि में ?"[46]

लोये अपने पति के कहने पर भी पुरानी अन्यायपूर्ण रीति को आगे बढ़ाने से इन्कार कर देती है। वह कुंठित समाज के द्वारा स्त्री के प्रति संकीर्ण मानसिकता का विरोध करती है और समाज के रीति-रिवाज और सोच में परिवर्तन लाने की बात करती है।

तिब्बतियों का भारत में विस्थापन और उनको अपने देश से निकलते देखकर देवयानी उनमें राष्ट्रप्रेम की बात करती है, उन्हें जागृत करती है कि वे लोग पलायन क्यों कर रहे हैं। इन लोगों को वहाँ रहकर राष्ट्र के लिए लड़ाई लड़नी चाहिए तब लोब्जंग बताती है कि वे हम लोगों के बच्चों को मार देते हैं या फिर अपनी सेना में रख लेते हैं। उन्हें अपने ढंग की शिक्षा देते हैं। अतः तिब्बतियों की पूरी नस्ल ही समाप्त कर देना चाहते हैं। वह कहती है कि इन हालातों में कोई अपने बच्चों को वहाँ कैसे रख सकता है। बाहर रहकर हम लोग अपने बच्चों को तिब्बती संस्कार दे सकते हैं।

गेशेजम्पा उपन्यास में मग-पा को जम्पा एक वीर नारी जो कि तिब्बत के लिए संघर्ष व लड़ाई लड़ना चाहती है बताना चाहता है। वह चाहता है कि तुम्हारी दीदी चिनपे एक शूर नारी के समान थी। वह अंधेरी रात में भी पहाड़ी रास्तों पर गर्भावस्था की अवस्था में मग-पा के साथ-साथ चल रही थी वे चीनीयों के प्रति अपनी क्रोधित दृष्टि रखती है। वे

कहती है कि "इसे ही नहीं, मैं पाँच बच्चे और पैदा करुँगी और सबको चमड़ी का शेर बनाउंगी, ताकि तुम्हारा अकेलापन खत्म हो और गाँव में आबादी भी बढ़े ।"[47]

गेशेजम्पा उपन्यास के माध्यम से नीरजा जी ने नारी के संघर्ष की चरमावस्था को प्रतिबिम्बित किया है । नारी यदि प्रतिरोध पर आ जाये तो वह हर अवस्था में संघर्ष कर सकती है ।

प्रस्तुत उपन्यास की नारी विस्थापन का ही नहीं, बल्कि सामान्य परिस्थितियों में होने वाले नारी के प्रति अत्याचार पर भी अपनी नजर रखती है । गेशेजम्पा उपन्यास की एक पात्र है लोब्जंग, इनका पति बच्चों के पैदा होने के साथ इन्हें छोड़कर चला जाता है । तो लोब्जंग अकेले ही उनका पालन-पोषण करती है । वह कहती है कि-

"आज तक उसने किसी से उधार नहीं लिया था सारनाथ में । अनेक मुसीबतें झेल जाने के बाद भी उसका आत्मसम्मान सुरक्षित था । एक उम्मीद के सहारे वह जी रही थी । पेमा के पैदा होने के बाद ही पहला पति उसे छोड़कर न जाने कहाँ भाग गया था । तब से लेकर आज तक वह अपने और अपने बच्चों के जीवन की सुरक्षा के लिए संघर्षरत थी ।"[47]

इस प्रकार लेखिका ने उपन्यास में नारी के विविध पात्रों के माध्यम से प्रेरणा का स्रोत हिन्दी साहित्य में दिया है । परिस्थितियाँ चाहे जैसी ही हों, स्त्री का संघर्ष कभी समाप्त नहीं होता है ।

5.7 इहामृग

इहामृग उपन्यास में बुद्ध के विचारों को विषय बनाया गया है । बुद्ध के विचारो के मूल्यों को चित्रित व स्थापित करने का प्रयास किया गया है । बुद्ध के विचार पर पाश्चात्य देशों द्वारा जो शोध कार्य हो रहा है, इस उपन्यास में उनको भी उद्घाटित किया गया जा रहा है । इहामृग उपन्यास में नायक 'मॉडवेल' है जो कि एक अमेरिकन विदेशी है

। वह भारत आकर 'अलभ्यानंद' नाम धारण करता है जो कि सारनाथ में शान्ती की खोज करने आता है। वह अपनी बेटी को साथ लेकर आया है। उसको भी यहाँ आकर नया नाम 'गौरी' मिल जाता है। इस उपन्यास में नारी के शोषण व अत्याचार की कथा भी कही जाती है। नारी पात्रों में मंजुलरानी और फूलझड़ी तथा उसकी माँ की पीड़ा के साथ-साथ नगरीय परिवेश का चित्रण के साथ ही नगरों के झुग्गी-झोंपडियों में रहने वाले, व उनकी आर्थिक, सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण मिलता है। मंजुलरानी का पति प्रतापसिंह जो एक सेवाभावी या एन.जी.ओ. चलाता है। वह सिर्फ सेवाभाव के लिए यह कार्य नहीं करता बल्कि जो अनुदान देश व विदेशों से मिलते हैं, उसमें वह घोटाला कर लेता है। ऐसे ही अन्य सेवाभावी संस्थाएँ हैं जो कि अनुदान में मिली धनराशि से सिर्फ घोषित खर्च के इतर का आर्थिक लाभ पा लेते हैं। इस उपन्यास में और भी सरकार व समाज कुछ अटपटे कार्यों को चित्रित किया गया है। जैसे किसी विदेशी को मूर्ति स्थापित करने के लिए सरकार जगह दे देती है। परन्तु अपने देश के गरीबों को देने के लिए दो गज जमीन भी नहीं है सरकार के पास। इहामृग उपन्यास में मधुसूदन पेशे से पत्रकार है। वह समाज में पनप रही बुराइयों को दिखाता है। लेखिका ने समाज के सभी तत्वों को दिखाने का प्रयास किया है। हंसू नाम का पात्र जो कि अपने माता-पिता के प्यार के कारण लापरवाह हो गया है वह आधुनिक युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। ईहामृग उपन्यास में समाज, व्यक्ति, राजनीति सभी की पाखण्डी प्रवृत्ति को दिखाया गया है। साथ-साथ ही सारनाथ व बुद्ध की भूमि सारनाथ से मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन को चित्रित किया गया है।

ईहामृग उपन्यास में लेखिका ने विभिन्न स्त्री चरित्रों का निर्माण किया है। कथा बड़े कौशल के साथ प्रस्तुत की है। कहानी में नारी पात्रों की संख्या कम है परन्तु स्त्री वर्ग की आवाज बड़े कौशल के साथ उठाई गयी है। लड़कियों की शादी के पहले या शादी के बाद की स्त्री दशा को लेखिका ने हर स्तर पर बात को उठाया है। गौरी जब फुलझड़ी से उसके बारे में पूछती है तो वह बड़े भोले-भाले तरीके से बताती है। फुलझड़ी के माध्यम से लेखिका ने समाज में नारी की स्थिति को स्पष्ट किया है। और भारतीय और विदेशी संस्कृति

में कितना अंतर है, ज्यादातर लोगों को पता ही नहीं है कि उनकी इच्छा अनिच्छा क्या है । डा. नीरजा माधव ने निम्न संवादों द्वारा भारतीय व पाश्चात्य के अन्तर को स्पष्ट किया है । जब फुलझड़ी कहती है कि गौरी से कि तुम्हारी शादी नहीं हुई।

"क्यों गौरी दीदी, आपकी शादी नहीं हुई है न?" उलटा एक प्रश्न फुलझड़ी की ओर से । गौरी अपने दोनों कन्धों को उचकाते हुए हँस पड़ी-

"अभी तक कोई अच्छा पति मिला ही नहीं ।"

"धत् अपना आदमी कोई अपने से खोजता है?" फुलझड़ी उसकी नादानी पर हँस पड़ी ।

"क्यों, तुम लोगों के यहाँ कौन खोजता है?" "

"हम लोगों के बापु, चाचा, मामा, नाना ।"[49] फुलझड़ी ने गर्व से बताया ।

फुलझड़ी एक ग्रामीण पात्र है तो गौरी विदेश से आयी हुई है । दोनों की सोच में बहुत अन्तर है । लेखिका दिखाना चाहती हैं कि भारतीय नारी को अपने अधिकारों व हक की कोई जानकारी ही नहीं है । बचपन में पिता व भाई की निगरानी में रहे, शादी के बाद पति की परछाई बनकर रहे, वृद्धावस्था में बच्चों की देखरेख में रहे । स्त्री की अपने अस्तित्व की चेतना है ही नहीं ।और यह पितृसत्तात्मक समाज स्त्री को उसका अधिकार देने को तैयार नहीं है । उसे समाज में दूसरे दर्जे की वस्तु माना जाता है । जैसा पुरुष वर्ग उन्हें निर्देश देगा वैसा ही वे करेंगी । गौरी विदेश से आयी हुई थी । वह भारतीय परम्परा को ज्यादा नहीं जानती थी । सो वह फुलझड़ी से शादी के लिए पूछती है । वह उसकी बड़ी बहनों के लिए भी पूछती है और आश्चर्य होता है कि फुलझड़ी की तीनों बहनों के पैदा होने में भी बहुत कम वक्त है । और कम उम्र में तीनों बहनों की शादी भी हो जाती है । भारतीय परम्परा ऐसी है कि लड़कियाँ अपनी स्वयं की शादी के लिए वर देखने नहीं जाती हैं । उनके चाचा, ताऊ, नाना आदि ही देखने जाते थे, जबकि पाश्चात्य परम्परा की गौरी है जो कहती है कि मुझे आज तक कोई अच्छा पति मिला ही नहीं । दोनों की परम्परा व सभ्यता में बहुत अन्तर है । अतः डॉ. नीरजा माधव ने भारतीय व पाश्चात्य नारी की सोच को दर्शाया है ।

फुलझड़ी अपने में एक मजबूत स्त्री है। वह अपने अस्तित्व व अधिकार के लिए विद्रोह करने से भी नहीं चूकती है। वह प्रतिकार करती है उसके उपर यदि कोई भी कुदृष्टि डालता है तो। एक बार की घटना है जब फुलझड़ी की मालकिन उसे अपने भाई को खोजने भेजती है तो वहाँ पर हंसू अकेला रहता है। हंसू माता-पिता के प्यार-दुलार की वजह से गलत रास्ते पर व दूषित मानसिकता का हो जाता है। वह फुलझड़ी को अकेला पाकर पीछे से पकड़ लेता है। क्योंकि पितृसत्ता की मानसिकता ही ऐसी है कि जो है पुरुष है। स्त्री की इच्छा, अनिच्छा कुछ नहीं होती है। परन्तु फुलझड़ी इस दुस्साहस पर हंसू को बुरा-भला कहकर विरोध करती है। क्रोधभरी दृष्टि से बोलती है कि-

"हे हरामी का पिल्ला, आज मैं अपने बाऊ से जरूर कहूँगी। गदहा कहीं का।" अपने को उससे छुड़ाते हुए फुलझड़ी ने आग्नेय नेत्रों से उसे घूरा था।[50]

डॉ. नीरजा माधव की स्त्री पात्र अपने विद्रोही स्वर को दिखाती है। फुलझड़ी का हंसू भले ही दोस्त हो परन्तु अनुचित आचरण करने पर स्त्रियों को प्रतिकार अवश्य करना चाहिए। सामने कोई भी हो। स्त्री पात्र के माध्यम से डॉ. नीरजा माधव का यह ईहामृग में प्रेरणात्मक सन्दर्भ किसी भी स्तर की स्त्री के लिए एक संदेश है। भले ही फूलझड़ी अनपढ़ है परन्तु अपने साथ होने वाले दुर्व्यवहार का वह प्रतिरोध करती है। सदियों से ऐसा हो रहा है कि पुरुष की अपनी इच्छा के सम्मुख स्त्री की इच्छा-अनिच्छा कोई मायने नहीं रखती है। वह पुरुष के सामने दूसरे दर्जे की वस्तु है। परन्तु नीरजा जी ने आर्थिक अभाव में रहने वाली फुलझड़ी से पितृसत्ता की सोच का प्रतिकार किया है।

नीरजा जी ने वर्तमान काल की आधुनिकता और रिश्तों को चकनाचूर करने वाली दूषित मानसिकता की भी आलोचना की है। इक्कीसवीं सदी में भी नारी अपने घरों में सुरक्षित दिखाई नहीं देती है। स्त्री के लिए तो रक्षक भी भक्षक बन जाता है। जैसे कि ईहामृग उपन्यास में दिखाया है कि घर पर ही वह सुरक्षित नहीं है। उसका बाप ही उसे बुरी नजर से देखता है। एक बार उसका बाप ही खुद शराब के नशे के वशीभूत होकर

अपनी बेटी की प्रशंसा करते हुए उससे आपत्तिजनक तरह से पेश आता है। तो उसकी अम्मा खुद ही चिल्लाती है-

"ई देखा ई शरबिया क। आपन बिटिया नशीली हिरोईन लगत बा। अरे राम रे राम ई कलजुं....

अम्मा तो बिलबिला उठी। कुछ और जोर से चिल्लाने लगी।

पापी, बेटी बेचवा रे... अरे खा-खा के साँड बना है। तेरे तन में कीड़ा पड़े मुँह झौसा..."[51]

पारिवारिक रिश्तों को तार-तार करने वाला यह प्रसंग वर्तमान समय में ऐसी घटनाएँ आये दिन होती हैं। उसकी माँ पिता के अनुचित व्यवहार पर अपना प्रतिरोध दर्ज कराती है। भले ही इसके बदले उसे अपने पति से शारीरिक प्रताड़ना मिली हो।

लेखिका ने एक स्त्री के पक्ष में दूसरी स्त्री को खड़ा किया है। वे सभी स्त्री को प्रेरित करना चाहती हैं कि एक दूसरे के साथ होकर ही लड़ाई लड़ी जा सकती है। पितृसत्ता की सोच को तभी आइना दिखाया जा सकता है। सदियों से पुरुषवादी सोच होने की वजह से वर्तमान समाज की गहरी मानसिकता है कि स्त्री व पुरुष बराबर नहीं हो सकते हैं। स्त्री शारीरिक व जैविक-शास्त्र के अनुसार कमजोर होती है। जबकि जैविक शास्त्र के अनुसार यह सिद्ध हो चुका है कि दोनों में शारीरिक व मानसिक रुप से कोई खास अन्तर नहीं है।

पाश्चात्य विचारों से पोषित गौरी स्वतंत्र जीवन जीना ही उसकी संस्कृति है। उसकी संस्कृति में जो धनार्जन होता है वह स्वयं ही उसका मालिक होता है। गौरी एक बार मधुसूदन के साथ ऑटोरिक्शा में जाती है। ऑटोरिक्शा का किराया मधुसूदन देना चाहता है तो गौरी उसे टोकती है कि अपना किराया मैं स्वयं दूँगी। परन्तु मधुसूदन उसे पैसे नहीं देने देता है। मधुसूदन के भारतीय व्यवहार पर वह चौंक जाती है और पाश्चात्य व भारतीय संस्कृति पर वह बताती है कि-

"विचित्र-सा लगता है यहाँ का यह रिलेशन। प्रथापसिंह के भी पूरे पैसों का हिसाब मंजुलरानी रखती है। उन्हें कहीं जाना होता है तो वे उनसे माँगते हैं। फुलझड़ी तक

के घर में भी ऐसी ही व्यवस्था है। वह अपनी सैलरी ले जाकर अपनी माँ को देती है। हमारे यहाँ ऐसा नहीं है। सबका अपना-अपना एकाउन्ट, सबकी अपनी-अपनी मर्जी, कोई किसी के मामले में हस्तक्षेप नहीं करता।"[52]

गौरी विदेशी है। वह भारतीय परिवार की इन सब परम्पराओं को देखती है तो उसे बहुत अलग लगता है। वह भारतीय व पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति को नयी-नयी दृष्टि से देखती है। विभिन्न क्रिया-कलाप से समझने का भी प्रयास करती है।

लेखिका ने ईहामृग के माध्यम से नारी की प्रताड़ना व त्रासदी को उद्घाटित किया है। और अपने हर स्वर के पात्रों के द्वारा स्त्री जगत को संदेश भी दिया है कि अन्याय व शोषण का प्रतिकार करना चाहिए और स्त्री को स्त्री के पक्ष में लड़ाई लड़नी पड़ेगी तभी स्त्री का अस्तित्व बचेगा। ईहामृग में भारतीय व पाश्चात्य स्त्री की मानसिकता का एक स्थान पर संयोजन किया गया है जो कि उपन्यास जगत में दुर्लभ है।

सन्दर्भ

1. उपन्यास समय और संवेदना, विजय बहादुर सिंह, पृष्ठ. 10
2. तेभ्यःस्वधा, नीरजा माधव, पृष्ठ. 20
3. वही, पृष्ठ.87

4. सीमोन द बुवार, अनुवादः प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ. 77

5. तेभ्यःस्वधा, नीरजा माधव,पृष्ठ. 98

6. वही, पृष्ठ.22

7. वही, पृष्ठ.74

8. सं.डॉ. रसीला उमरेटिया, भारत विभाजन और हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ.11

9. नीरजा माधव सृजन के आयाम, सम्पादिका डॉ. ब्रजबाला सिंह, पृष्ठ., 25

10. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, नीरजा माधव, पृष्ठ. 12

11. वही, पृष्ठ.33

12. स्त्रीवादी साहित्य-विमर्श, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृष्ठ.189

13. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, पृष्ठ.48

14. वही, पृष्ठ.57

15. नारी विमर्श और मैत्रेयी पुष्पा का कथा साहित्य, डॉ. अनिला के. पटेल,पृष्ठ.57

16. नीरजा माधव-सृजन के आयाम, पृष्ठ. 114

17. दलित कहानियों में नारी, डॉ. साताप्पा शामराव सावंत, पृष्ठ.72

18. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ.55

19. वही, पृष्ठ.59

20. वही, पृष्ठ.98

21. वही, पृष्ठ.103

22. वही, पृष्ठ.177

23. नीरजा माधव-सृजन के आयाम, पृष्ठ.73

24. यमदीप, पृष्ठ. 194

25. वही, पृष्ठ.195

26. वही, पृष्ठ. 58

27. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृ.52

28. यमदीप, पृष्ठ. 235

29. वही, पृष्ठ. 286

30. रात्रिकालीन संसद, नीरजा माधव,पृष्ठ. 50

31. वही, पृष्ठ. 52

32. वही, पृष्ठ. 53

33. वही, पृष्ठ. 96-97

34. वही, पृष्ठ.97

35. वही, पृष्ठ. 99

36. वही, पृष्ठ.101/97

37. देनपा : तिब्बत की डायरी, नीरजा माधव, पृष्ठ. 59

38. वही, पृष्ठ.29

39. रमणिका गुप्ता, आपहुदडी?, पृष्ठ.21

40. देनपा : तिब्बत की डायरी, पृष्ठ.134

41. वही, पृष्ठ.163

42. वही, पृष्ठ.177

43. नीरजा माधव-सृजन के आयाम, पृष्ठ.79

44. गेशेजम्पा, डॉ. नीरजा माधव, पृष्ठ. 18

45. वही, पृष्ठ.14

46. वही, पृष्ठ.91-92

47. वही, पृष्ठ.13

48. वही, पृष्ठ.21

49. ईहामृग, नीरजा माधव, पृष्ठ.30

50. वही, पृष्ठ.52

51. वही, पृष्ठ. 119

52. वही, पृष्ठ.109